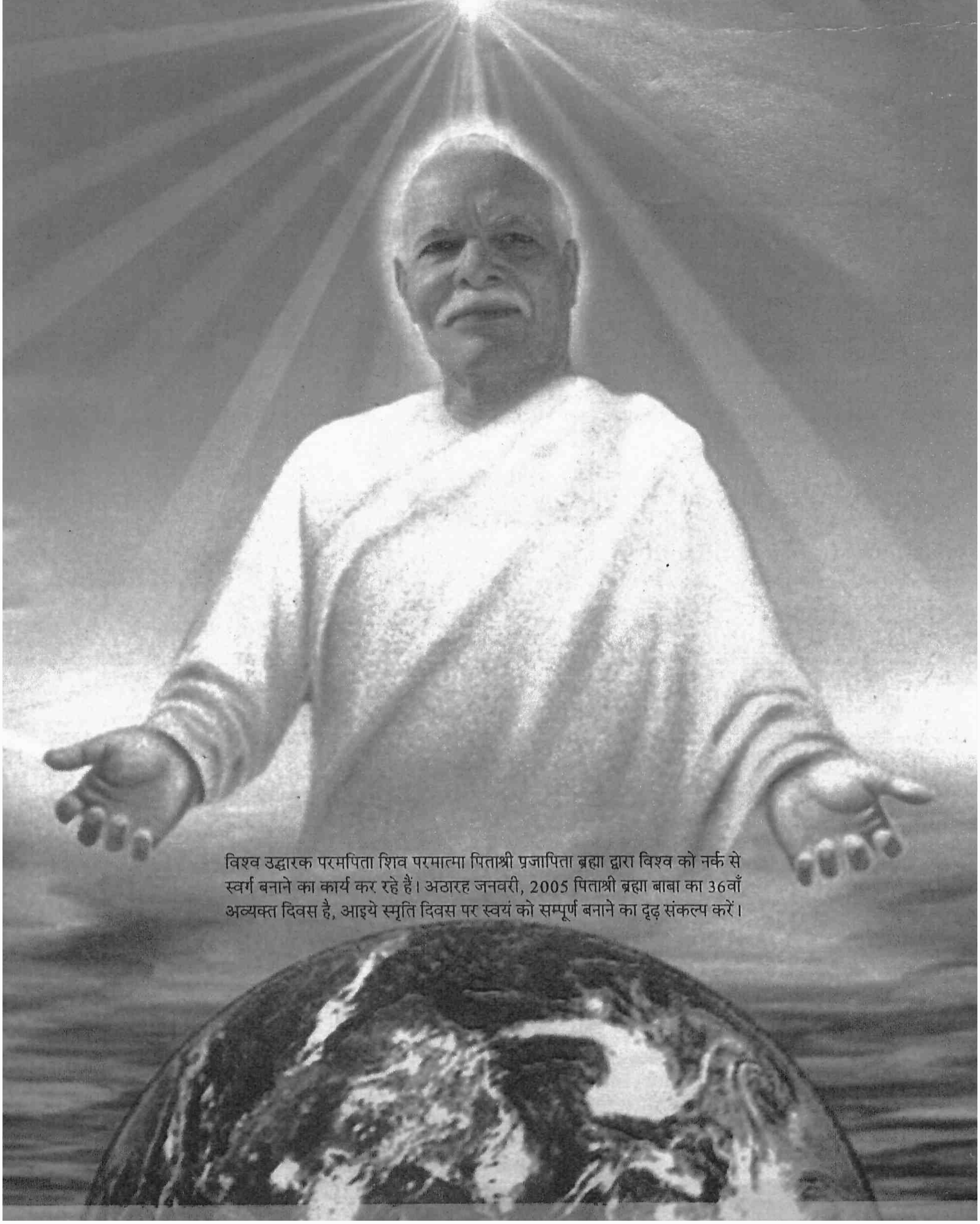
ज्ञानामृत मासिक

स्मृति दिवस विशेषांक

वर्ष 40, अंक 07, जनवरी 2005, मूल्य 5.00



विश्व उद्धारक परमपिता शिव परमात्मा पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा विश्व को नर्क से स्वर्ग बनाने का कार्य कर रहे हैं। अठारह जनवरी, 2005 पिताश्री ब्रह्मा बाबा का 36वाँ अव्यक्त दिवस है, आइये स्मृति दिवस पर स्वयं को सम्पूर्ण बनाने का दृढ़ संकल्प करें।

















1. **रायपुर-** राष्ट्रीय एकता युवा सम्मेलन का दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ करते हुए छत्तीसगढ़ के राज्यपाल लेफ्टिनेन्ट जनरल (सेवा निवृत्त) महामहिम भ्राता के.एस. सेठ जी, राज्य की प्रथम महिला बहन वीणा सेठ जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, छ.ग. के गृहमंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल जी, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी, ब्र.कु. चन्द्रिका बहन, ब्र.कु. ओमप्रकाश जी तथा ब्र.कु. कमला बहन। 2. **काठमाण्डौ-** *नेपाल के श्री 5 महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव सरकार ब्र.कु. किरण बहन को प्रबल गोरखा दक्षिण बाहू (सुविख्यात मेडल) से* सम्मानित करते हुए। साथ में हैं श्री 5 युवराजाधिराज पारस वीर विक्रम शाहदेव सरकार तथा अन्य। 3. **दिल्ली (जैतपुर)-** नवनिर्मित साधना कुंज के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्जवलित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, दादी रुक्मणि जी, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य। 4. **चेन्नई-** ब्र.कु. शान्ता बहन तमिल नाडू के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुरजीत सिंह बरनाला का स्वागत करती हुई। 5. **गुवाहाटी-** ब्र.कु. शीलू बहन आसाम के मुख्यमंत्री भ्राता तरुण गोगई को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई। 6. **आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)-** विले पार्ले सेवाकेन्द्र द्वारा 'स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा खुशी' विषय पर आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. योगिनी बहन, भ्राता सी. चन्द्रशेखर रेड्डी जी, ले.ज. मुकेश विज जी तथा अन्य। 7. **कुलंव (महा.)-** मुख्यमंत्री भ्राता विलासराव देशमुख को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मीना तथा ब्र.कु. विट्ठल भाई। 8. **पाराद्वीप-** कलिंग बालियात्रा महोत्सव में चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक जी। साथ में हैं ब्र.कु. मानसी बहन तथा अन्य।

नववर्ष के प्रति दादी जी का शुभ संदेश



स्वर्णिम दुनिया के रचयिता, वरदानी, विश्वकल्याणकारी, मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता, ज्ञानामृत और योगामृत का पान करा कर अविनाशी पद की प्राप्ति कराने वाले भोलानाथ शिव बाबा के अति स्नेही, सर्व राजयोगी भाई-बहनें, नवयुग की याद अपने में समाए हुए, पुराने युग के इस नए वर्ष की बहुत-बहुत बधाइयाँ तथा मुबारक!

अब तो दिल और दिमाग में स्वर्णिम दुनिया की वह मनमोहक छवि छाई है जिसमें गाय-शेर भी एक घाट पर पानी पियेंगे, सभी का सभी के प्रति असीम प्रेम और सम्मान होगा, विश्व महाराजन श्री लक्ष्मी तथा श्री नारायण प्रजा की पुत्रवत् पालना करते हुए अटल, अखण्ड दैवी स्वराज्य में श्रेष्ठाचारी जीवन व्यतीत करेंगे और प्रकृति भी पाँचों तत्वों सहित देवताई जीवन पर बलिहार जायेगी। आज समय परिवर्तन के लिए पुकार रहा है। संसार कलियुग और सतयुग के सन्धिकाल में से गुजर रहा है। इसी समय हमें माया, प्रकृति और समय इन तीनों पर विजय प्राप्त कर, चेहरे और चलन में दिव्यता भर कर, पद्मापद्म भाग्य की चमक मस्तक पर धारण कर, अपने सम्पूर्ण परिवर्तन द्वारा खुदाई खिदमतगार बनना है। तो आप सभी नित्य ज्ञान-मोती चुगते हुए सर्वशक्तियों को अपने में धारण कर रहे हो ना! इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर भगवान ने सर्वशक्तियों के भण्डार की चाबी हम वत्सों को सौंपी हुई है। हम मालिक हैं। तो अपने मालिक बच्चों प्रति प्राणप्रिय भोलानाथ शिव बाबा का कहना है – मेरे नूरे रत्नो, सर्वशक्तियों को अपने ईशारे प्रमाण चलाओ, समय अनुसार हर शक्ति हाजिर हो, समय बीतने पर नहीं। इसके लिए हज़ूर की हर आज्ञा पर 'जी हाजिर' करो, तो शक्तियाँ भी हर समय हाजिर रहेंगी। हर पल, हर श्वास में 'मेरा बाबा' की धुन लगाओ। ज्ञान के गुह्य राज़ों में रमण करो। स्वमान और सम्मान का बैलेन्स रख स्वस्थिति को मजबूत बनाओ। सदा सर्व के प्रति सम्मान दाता बनो। इस नए वर्ष में जन-जन तक ईश्वरीय सन्देश पहुँचा दो। विजयमाला के मणके बनने और बनाने में अथक होकर जुट जाओ। हर आत्मा की झोली को ईश्वरीय वरदानों से भरपूर कर दो जिससे कि 'पाना था सो पा लिया' यह सुखदाई बोल हर नर-नारी के मुख पर गूँज उठे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी स्वमान में रह कर सर्व को सम्मान देने वाले, शक्ति सम्पन्न होली हंस नए वर्ष में प्रभु प्रत्यक्षता का नगाड़ा अवश्य बजायेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आप माननीय, सर्व उपकारी तथा बाप समान बनने वाले ब्रह्मा-वत्सों को नव वर्ष की, नवयुग की तथा स्व पुरुषार्थ में तीव्रगति की उड़ान भरने की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

आपकी दैवी बहन

ब्र.कु. प्रकाशमणि

अमृत-सूची

❑ साहित्य और चित्रों द्वारा ईश्वरीय सेवा में तीव्रगति 2
❑ स्मृति स्वरूप पिताश्री ब्रह्मा बाबा (सम्पादकीय) 3
❑ बाबा ने निर्मल कन्याओं को शिव-शक्तियाँ बना दिया 5
❑ मम्मा व बाबा के साथ के अनुभव.. 8
❑ पुरुषोत्तम संगमयुग – भूगोल तथा संस्कृति के साथ सम्बन्ध 12
❑ भगवान ने कहा – तुम सम्पूर्ण योग्य हो 14
❑ मुबारक पदमगुणा (कविता) ... 17
❑ ऐसे थे साकार में बाबा हमारे .. 18
❑ शक्तिप्रदायक स्मृतियां 19
❑ बाबा ने छुआई रूहानियत की ऊँचाइयाँ 23
❑ हे पुरुष पुरातन आदि देव! (कविता) 24
❑ साकार बाबा का सुखद सान्निध्य 25
❑ प्रजापिता ब्रह्मा 28
❑ जिसकी तलाश थी, ... 30
❑ सचित्र सेवा समाचार 37

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	60/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	60/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	550/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	550/-	6,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383

– संजय की कलम से

साहित्य और चित्रों द्वारा ईश्वरीय सेवा में तीव्रगति

प्यारे बाबा से साकार रूप में, ईश्वरीय सेवा अर्थ मेरा प्राय: मिलना होता रहता था और वार्तालाप भी होता था। उन मुलाकातों से प्राप्त अमूल्य अनुभवों में से कुछ को यहाँ प्रभु-प्रसाद के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ –

ईश्वरीय सेवार्थ बाबा के कार्य करने और कराने की रफ़्तार देखते ही बनती थी। उससे तो किसी को भी यह आभास हो सकता था कि सचमुच यहाँ सारे विश्व को संदेश देने की मुहिम चल रही है अथवा यह युग-परिवर्तन एवं विश्व-परिवर्तन का कार्य चल रहा है। प्रतिदिन डाक द्वारा भेजने के लिए साहित्य के बहुत-से पैकेट बड़ी तीव्र गति से बन रहे होते। प्रतिदिन प्रात: बाबा स्वयं भी बहुत तीव्र गति से बहुत-से पत्र लिख रहे होते। हर आये दिन बाबा किसी विषय पर कोई पुस्तिका, फ़ोल्डर या हैंडबिल आदि छपवाने का निर्देश देते। उन दिनों दिल्ली में डाक-घर दिन में तीन बार डाक बाँटता था और हर डाक में बाबा के दो-तीन या कम-से-कम एक पत्र कोई-न-कोई नई चीज़ छपवाने के बारे में होता और मज़े की बात तो यह है कि हर बार एक तिथि निश्चित की गई होती कि अमुक तिथि तक वह साहित्य छपवा कर सेवा-स्थानों पर पहुँचा देना है। जिस समय पत्र मिलता उसी समय ही लिखने और अनुवाद करने का कार्य शुरू हो जाता क्योंकि उसमें समय की गुंजाइश ही न होती। जब हम हाँफते-हाँफते प्रेस में पहुँचते तो छापेख़ाने का मालिक या प्रबन्धक मुस्कराते हुए हाथ जोड़ कर कहता – "जगदीश भाई, आप अर्जेन्ट (urgent) काम ही लाये होंगे? है न अर्जेन्ट? देखो भाई, इस बार मैं हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि मुझे माफ़ करो।" मैं कहता – "माफ़ी तो भगवान से माँगो, यह तो उसी का काम है और इस बार तो बहुत ही अर्जेन्ट (urgent) है।" बेचारा बहुत आवेदन-निवेदन करता परन्तु हम उसकी कहाँ मानते थे? मान भी कैसे सकते थे? वह कहता – "जगदीश भाई, अर्जेन्ट तो कभी-कभी होता है परन्तु आप तो हर बार यही कहते हो कि यह अर्जेन्ट है।" कई बार तो वे बिल्कुल ही अड़ जाते और हमारी ओर से अनुनय-विनय से भी काम न चलता। छापेखाने में अक्षर जोड़ने वाले (compositor) भी हमारी ओर से प्रबन्धक को कहते – "आप इनका काम ले लीजिये, हम रात को देर तक कर देंगे।" परन्तु वे मिट्टी के माधो बन कर बैठ जाते और 'हाँ' न करते। तब हमें भी रूप रचना पड़ता। जब यह कहने से बात न बनती कि यह तो सतयुग की स्थापना के लिए कार्य है, आदि-आदि......तब कई बार तो यह



भी कहना पड़ता कि "प्रेस तो शिव बाबा की है, यहाँ तो उसी का काम चलेगा। क्या यह शिव बाबा का नहीं है?" वे कहते – "है तो सब-कुछ शिव बाबा का ही, हम भी उन्हीं के हैं।" इस प्रकार हुज्जत चलती तो हम साफ़ बोल देते कि हम तो मशीन रोक देंगे। परस्पर प्रेम तो था ही। आखिर

शेष पृष्ठ.....34 पर

सम्पादकीय ....

स्मृति स्वरूप पिताश्री ब्रह्मा बाबा



संसार में सभी धर्म-सम्प्रदायों तथा भक्ति मार्ग में भी ईश्वरीय स्मृति का बहुत महत्त्व है। भगवान की प्यार भरी स्मृति में निरन्तर मन को लगाना तथा उन्हीं के गुणों का सिमरण करते रहना किसी भी आध्यात्मिक साधना का केन्द्र होता है। श्रीमद्भगवद्गीता का तो उद्देश्य ही स्मृति-स्वरूप बनाना है। इसलिए ही स्मृति को डिगाने वाली बातों से बचाने और ईश्वरीय स्मृति को एकरस बनाने की युक्तियों से यह ग्रन्थ भरा पड़ा है। कई लोग प्रश्न पूछते हैं कि भगवान को याद करना क्यों जरूरी है ? इसका उत्तर यह है कि 'यद् ध्यायति तद् भवति' की कहावत के अनुसार, स्मृति की समर्थी से साधक का मन भी प्रभु के समान गुण सम्पन्न बन जाता है। जैसे लोहा यदि पारस को छूता है तो इससे पारस को कोई फायदा नहीं परन्तु लोहे का कायाकल्प हो जाता है अर्थात् वह सोना बन जाता है। इसी प्रकार, साधक भी जब मन-बुद्धि से परमात्मा का स्पर्श करता है तो उसकी कमी-कमजोरियाँ नष्ट हो जाती हैं और उसके व्यक्तित्व में सम्पूर्ण दिव्यता का समावेश हो जाता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ने अपने 33 वर्षों के ईश्वरीय जीवन में ध्रुव (अटल) स्मृति को प्राप्त कर लिया था। वे चलते-फिरते, उठते-बैठते स्मृति स्वरूप रहते थे। उनके सर्व मोह नष्ट हो गए थे और वे शरीर में रहते भी अपने प्रियतम शिव पिता से एकाकार हो रहने का अहसास सबको कराते थे। यहाँ जानने योग्य बात यह भी है कि स्मृति-स्वरूप को ही दूसरे शब्दों में योगयुक्त कहा गया है। योग का अर्थ सुन्न समाधि नहीं है। योगी तो चलते-फिरते, संसार में रहते अपने कर्मों द्वारा स्वयं को और सर्व को दैवी पद की ओर अग्रसर करता है। पिताश्री, श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित योगी की तरह इन्द्रियों के राग-द्वेष से मुक्त, सदा आत्म-स्वरूप में स्थित और आत्मिक सुख में सन्तुष्ट, इच्छा मात्रम् अविद्या, चिन्ता मुक्त, लगाव मुक्त, द्वेष मुक्त, निरहंकारी, क्षमाशील, सर्व के मित्र, शुभचिन्तक, सर्वंश त्यागी, दृढ़ निश्चयवान तथा एकरस स्थिति में टिक कर ऐसे चुम्बकीय प्रकम्पन देते थे जो वत्सों की बुद्धि की तार भी परमात्मा शिव से सहज ही जुट जाती थी।

प्यारे ब्रह्मा बाबा के तन में शिव बाबा का निवास निरन्तर होने से दोनों को अलग-अलग पहचानना तो असम्भव ही-सा कार्य था। ब्रह्मा बाबा के नेत्रों रूपी खिड़कियों से शिव बाबा आत्माओं से मिलते, ब्रह्मा बाबा के वरद् हस्तों से शिव बाबा ही आत्माओं को दुलारते और ब्रह्मा बाबा के मुख से शिव बाबा ही मीठे बच्चे, लाडले बच्चे, प्यारे बच्चे कह कर पुकारते, पुचकारते। योग-तपस्या ने प्यारे बाबा के तन को पृथ्वी पर ही सुखधाम और शान्तिधाम के समान आनन्ददायी बना दिया था। पवित्रता, दिव्यता और नम्रता के वे शिखर-पुरुष थे। उनके शीतल अंगों का स्पर्श पाते ही जन्म-जन्म से विकाराग्नि में जलती आत्मा शीतल-स्वरूप हो जाती थी।

प्यारे बाबा बच्चों से जब भी मिलते, अपने पितृस्नेह से सर्व के दिलों को जीत लेते। वे कहते – "बच्चे,

किसी भी प्रकार की तकलीफ में नहीं रहना। हाँ, बाबा एक तकलीफ देते हैं कि निरन्तर शिव बाबा को याद करो। शिव बाबा न तो कोई उपवास या प्राणायाम करने का कष्ट देते हैं और न किसी विशेष आसन पर हठ करके बैठने के लिए कहते हैं, बस, इतना ही कहते हैं कि बुद्धि द्वारा मुझे याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप नाश होंगे, खुशी का पारा चढ़ेगा। अच्छा बच्चे, बैठो अतिप्रिय शिव बाबा की याद में। अशरीरी हो जाओ और बुद्धि को ले जाओ परमधाम में। बस, दिन भर यही अभ्यास करते रहो ताकि अवस्था परिपक्व हो जाए। बस यही धुन लगी रहे कि मैं आत्मा हूँ, परमधाम से सृष्टि-मंच पर पार्ट बजाने आई हूँ, यह सृष्टि-ड्रामा अब पूरा हुआ। अब मुझे परमधाम वापस जाना है। चलो बच्चे, अब बुद्धि को ले जाओ शिव बाबा के पास। देखो, तुम बैठे तो फर्श पर हो परन्तु तुम्हारी बुद्धि सदा अर्श पर (परमधाम में) रहती है। तुमको स्पष्ट लक्ष्य मिला है, अब उसमें स्थित हो जाओ।" प्यारे बाबा के ऐसे बोलते-बोलते सभी वत्स शिव बाबा की याद से आत्मा में लाइट-माइट भरने में मगन हो जाते। दिव्य सुख का भरपूर खजाना शिव बाबा से लूटते। पिता के प्रेम में विभोर होकर, प्यार का गहन रसास्वादन कर दिव्य मस्ती में मस्त हो जाते। प्यारे बाबा स्वयं भी अमृतवेले दो बजे से याद का गहन अभ्यास करते। उनके कमरे के पास से गुजरने वाले वत्सों के अंग-अंग पर भी उनके वे तप:प्रकम्पन प्रभाव डालते। वे ठिठक जाते, एकाग्र हो जाते जैसे कि नाद सुन कर मृग स्थिर हो जाता है।

ब्रह्मा बाबा सारे दिन में भी याद में रह कर ही वत्सों से नेत्र-मिलन करते, प्रेरणा देते। भण्डारे में जाते तो कहते – "बच्ची, शिव बाबा की याद में भोजन बनाओगी तो भोजन में शक्ति भर जायेगी। सदैव याद रखना, यह भण्डारा शिव बाबा का है, उन्हीं को भोग लगाने के लिए हम भोजन बना रहे हैं।" कपड़ों की धुलाई वाले स्थान पर भी बाबा हंस चाल चलते हुए पहुँच जाते और कहते – "प्यारे शिव बाबा तो बेहद के धोबी हैं। वे आत्माओं को ज्ञान-योग से पावन बनाते हैं। बच्चे, आत्मा को भी साथ-साथ धोते रहना।" प्यारे बाबा बच्चों को सैर पर ले जाते तो भी स्मृति-स्वरूप बनाए रखते और कहते – "बच्चे, इस यात्रा के साथ-साथ परमधाम की यात्रा भी करते रहना।" बाबा बहुत रमणीकता, उमंग, प्रेम और रूहानियत से सारे कर्त्तव्यों को पूरा करते।

कपड़े सिलाई करने वाले वत्सों को कहते –"बच्चो, वस्त्रों की सिलाई करते, भविष्य राजाई पोशाक का अधिकारी बनने का कार्य भी साथ-साथ करते रहना।" इस प्रकार, लौकिक बातों में अलौकिकता का समावेश कर पुरुषार्थ को सरल कर देते और स्मृति स्वरूप रहना भी सिखा देते। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपने अन्तिम जन्म में भक्ति में भी भगवान से एकान्तिक प्रेम किया था और ज्ञान-मार्ग पर चलने पर उनके वे संस्कार उनको बहुत मदद कर रहे थे। शिव बाबा की याद में बैठते ही उनके चेहरे पर ऐसा नूर छा जाता था कि देखते ही बनता था। वे कभी कहते थे – मैं उनका मुरब्बी बच्चा हूँ और कभी कहते थे – मैं उनकी प्यारी वन्नी (स्त्री) हूँ। बाबा ने सर्व सम्बन्धों से शिव बाबा को दिलतख्त पर ऐसा विराजमान कर लिया था कि उनके श्वास, संकल्प सब शिव अर्पण ही थे। प्यार के किस्से तो बहुत सुने हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा के इस अलौकिक, अनोखे, अटूट, एकरस प्रेम की मिसाल अन्यत्र मिल ही नहीं सकती। उनके इसी स्मृति स्वरूप जीवन से प्रेरणा पाकर आज 7 लाख से भी अधिक ब्रह्मावत्स आध्यात्मिक किलकारियाँ कर रहे हैं और उनके नक्शेकदम पर चल कर संसार को स्वर्ग बनाने में तन-मन-धन से जुटे हुए हैं। ऐसे नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा पिताश्री जी को उनके 35वें अव्यक्तारोहण दिवस पर हम सभी ब्रह्मावत्सों का, उनकी आशाओं को पूर्ण करने के दृढ़-संकल्प के साथ, कोटि-कोटि प्रणाम।

– ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश

बाबा ने निर्मल कन्याओं को शिव-शक्तियाँ बना दिया



सृष्टि पर अवतरित भगवान की पहली नजर जिन नैनन, अमूल्य मणियों पर पड़ी उनमें से सीतू दादी भी एक हैं। एक बल-एक भरोसे से चलने वाली, सदा निर्भय, यज्ञ के प्रति पूर्ण वफादार, अनासक्त और सत्यवादी दादी सीतू के जीवन इतिहास की कई पुस्तकें बन सकती हैं। परन्तु सिन्धु को बिन्दु में समा लेने की कला से, भगवान की पलकों में पलने के अनुभव को वे सार रूप में लिख रही हैं।

– सम्पादक

मेरे घर में श्री कृष्ण जी का मन्दिर था। माताजी, दादाजी श्रीकृष्ण की खूब भक्ति करते थे। मैं भी बचपन से ही श्रीकृष्ण की मस्त गोपी थी। सात भाइयों में इकलौती बहन होने के कारण सबकी लाडली थी पर मुझे श्रीकृष्ण बहुत लाडला था। जो भी 12 महीने के दौरान पैसा मिलता था, सारा का सारा श्रीकृष्ण के जन्म-दिन अर्थात् जन्माष्टमी पर उनकी छठी मनाने में खर्च कर देती थी। एक पैसा भी अपनी किसी चाहत पर खर्च नहीं करती थी। लौकिक नाम सीता था, प्यारा बाबा सीतू बेटा कह बुलाता था। प्यारे शिव बाबा ने अलौकिक नाम दिया था चन्द्रशान्ता। जब कभी मैं माँ से कोई चीज माँगती थी तो वह मुझे कहती थी कि श्रीकृष्णजी देंगे। मैं आँखें बन्द कर श्रीकृष्ण जी के ध्यान में बैठ जाती थी और माँ चुपके से उस चीज को मेरे सामने रख देती। मेरी बाल-बुद्धि उसे श्रीकृष्ण द्वारा दिया हुआ ही स्वीकार कर लेती।

दादा लेखराज लौकिक रिश्ते में मेरी बुआ का देवर लगता था और हैदराबाद-सिन्ध में 'दादा' नाम से बहुत मशहूर था। दादा के एक चाचाजी बीमार रहते थे। दादा उनको रामायण सुनाते थे। हम सुनने जाया करते थे और दादा का सुनाने का तरीका इतना मनोहारी था जो दिल पर छाप लग जाती थी। मैंने केवल 5वीं कक्षा तक पढ़ाई की। केवल 7 वर्ष की आयु में ही पिताजी का साया सिर से उठ गया। जब मैं 13 साल की थी तब ओम मण्डली की शुरूआत हुई और मैंने उसमें जाना शुरू कर दिया परन्तु अभी जाते हुए मात्र तीन दिन ही हुए थे कि मेरे से बड़े भाई ने शरीर छोड़ दिया। मुझे मोह तो बहुत था, मैं भाई की अर्थी के पीछे बैठ गई। मुझे बहुत समझाया गया पर दु:ख कम नहीं हो रहा था। दु:ख के मारे परमात्मा के प्रति भी संशय बुद्धि बन रही थी। ओम मण्डली में जाने वाली एक माता ने मुझे बाबा के पास जाने की प्रेरणा दी। कहा कि वहाँ तुमको शान्ति मिलेगी और बाबा दु:ख दूर करेगा। वहाँ गई तो प्यारा बाबा तपस्या में बैठा था, मेरे पर ज्योंहि उनकी दृष्टि पड़ी, मैं ध्यान में चली गई और 3 बजे से 10 बजे तक ध्यानावस्था में ही रही। बाद में घरवालों ने मुझे बहुत ढूँढ़ा तो मैं बाबा के कमरे में ध्यानमगन मिली। बाबा ने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फिराया और मैं ध्यानावस्था से नीचे आ गई। मैं तो निराकार प्रभु को ही साकार तन में देख रही थी। मेरे स्नेह भरे नयनों को देख प्यारे बाबा ने कहा – 'बच्ची, आया हूँ तो अब लेकर ही जाऊँगा।' बाबा ने मुझे एक सेव दिया। मैं घर लौट गई। घरवालों ने जब पूछा कि वहाँ तुमको क्या मिला, तो मेरे मुख से सहज ही निकला कि भक्ति का फल ज्ञान मिला और बाप (पिता)

मिला। अगले दिन सुबह नौ बजे बाबा के पास मैं पुन: गई। बाबा ने कागज, पैन लेकर शरीर, आत्मा, त्रिमूर्ति आदि चित्र बनाए और इन पर समझाया। प्यारे बाबा के इस दिल-जीत स्नेह ने मुझे भाई का वियोग भुला दिया। मेरा रोना बन्द हो गया और शान्त रहने लगी। घरवालों ने भी खुशी से मुझे ज्ञान सीखने की अनुमति प्रदान कर दी।

कुछ समय बाद बाबा बनारस चला गया। वहीं से बाबा पत्र लिखता था कि मैं तो सिर्फ बैठकर ॐ की ध्वनि उच्चारता हूँ। हम सभी ने भी, जो ओम मण्डली में जाते थे, यही कार्य किया। हम जैसे ही ॐ की ध्वनि उच्चारते थे तो तीन या चार बहनें अवश्य ही ध्यान में चली जाती थीं और वहाँ श्रीकृष्ण को देखती थीं तथा रास करने लगती थीं। ऐसा करते-करते हमारा संगठन बड़ा होता गया। बाबा को पत्र द्वारा इसकी सूचना दी गई। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपना मकान खाली करवाकर हमको क्लास के लिए दे दिया। एक बार बाबा ने पत्र में लिखा – ''पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा।'' उस समय हम इसका अर्थ नहीं समझते थे पर बाबा के ये अनुभव अति-अति प्रिय लगते थे। ओम मण्डली के लिए यह मशहूर हो गया था कि जैसे एक पैसे में कुल्फी मिलती है, उतनी सहजता से यहाँ देवी-देवताओं तथा स्वर्ग आदि का साक्षात्कार होता है। भक्ति मार्ग में तो भक्त साक्षात्कार की इच्छा-पूर्ति के लिए बहुत कष्ट उठाते हैं परन्तु यहाँ तो अति सरलता से यह इच्छा पूरी होती है।

कुछ समय बाद बाबा बनारस से लौट आया। बाबा के तप और तेज में ऐसा आकर्षण था कि उनके परिवार वाले तथा अन्य परिवारों वाले भी ज्ञान सुनने आने लगे। धीरे-धीरे पवित्रता, अन्न की शुद्धि आदि के बारे में सभी को पता पड़ता गया। भागवत में लिखा है कि भगवान से प्रीतबुद्धि आत्माओं पर असुरों ने अत्याचार किया, वही इतिहास पुन: दोहराया जाने लगा। हमारे घरवालों ने हमारे पर रोक लगानी शुरू कर दी। उस समय के सिन्धी समाज में कोई कन्या अपनी माँ की भी बात के विरोध में ज़रा-सा मुँह खोलने तक की हिम्मत नहीं कर पाती थी। मैं युक्ति से ईश्वरीय ज्ञान की धारणा में तत्पर थी। अमृतवेले जब सब सोए रहते थे तो चुपके से ओम मण्डली में पहुँच जाती थी और ज्ञानामृत का पान कर पुन: आकर सो जाती थी। हैदराबाद की परिस्थितियाँ दिनों-दिन अधिक बिगड़ती गईं तो प्यारे बाबा बोर्डिंग के बच्चों तथा अपने परिवार सहित कराची चले गए। बाबा ने तीन दिन में तीन बंगले लेकर सभी के रहने की व्यवस्था कर दी। हम जो बाँधेले थे, बाबा के संग के लिए जल बिन मछली की तरह तड़फने लगे। मुझे पक्का निश्चय था कि बाबा के पास मुझे जाना ही है। मेरे लौकिक भाई ने मुझे आकर कहा – 'बाबा तो गया, अगर तुमको जाना है तो दो घण्टे के अन्दर निर्णय करो। अभी दो बजे हैं, चार बजे यदि घर में उपस्थित मिली तो तुम्हारी शादी कर देंगे, यदि चली गई तो समझो वहाँ (ओम मण्डली) की हो गई।' मेरे कपड़े, चप्पल ताले में रखकर तथा चाबी को अपने बिस्तर के नीचे रखकर भाई सो गया। बिना पैसे और कपड़े के मैं कैसे जाऊँ, यह प्रश्न मेरे सामने जहरीले सर्प की तरह फन फैलाए खड़ा था। प्रभु का कार्य हो और मन की सच्ची लगन हो तो चाह अनुसार राह निकल ही आती है। दादाजी की मुझ से विशेष प्रीत थी। मैंने बड़े प्यार से उनके पास जाकर, आँसू बहाकर कहा कि यदि आप मेरी शादी करेंगे और मैं किसी भी कारण से ससुराल में दु:खी हुई तो रोती हुई आपके पास ही तो आऊँगी। इससे तो अच्छा है कि आप मुझे ऐसे स्थान पर भेज दो, जहाँ दु:ख का

नाम-निशान भी न हो। दादाजी ने पूछा कि ऐसी कौन-सी जगह है? मैंने कहा – 'ओम-मण्डली, जहाँ मैं जाती थी। दादा कराची में गया है तो अब मैं भी वहाँ जाना चाहती हूँ।' दादा लेखराज जी के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। वे उनके सात्त्विक जीवन और श्रेष्ठ आचार-विचार से भली-भाँति परिचित थे। उन्होंने कहा – 'दादा जैसा तो सृष्टि में कोई मिलेगा ही नहीं लेकिन यदि आप उनके पास जाएँगी तो सरकार उनको तकलीफ देगी इसलिए आप न जाओ।' मैंने कहा – 'आप ओम राधे के नाम पर चिट्ठी लिख दो – ओम राधे जी, हम अपनी पौत्री को ज्ञानामृत पीने और पिलाने के लिए खुशी से छुट्टी दे रहे हैं।' दादाजी ने ऐसा ही किया। घर में माँ के सिवाय किसी को इस बात का पता नहीं पड़ा। दादीजी मेरा अतिशय विरोध करती थी। उसके मन में था कि चाहे इसके हाथ-पाँव टूट जाए, तो भी शादी ज़रूर करूँगी। दादाजी और भाई की सहानुभूति मेरे प्रति थी इसलिए मार-पीट का कम सामाना करना पड़ा।

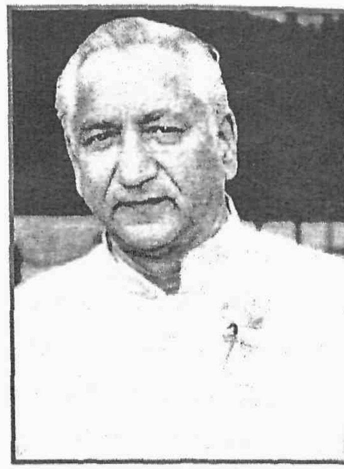
पत्र लेकर बाहर निकली, प्यारे शिव बाबा की स्मृति तो मन में बसी ही थी, जमना दादी के घर जाकर चप्पल, कुछ कपड़े तथा सवा रुपया लिया और ईशु दादी के पिताजी से गाड़ी की टिकट बनवाकर देने को कहा। सवा रुपये में टिकट बन गई। परन्तु उन्होंने मुझसे नहीं पूछा कि तुमको कराची में किस स्थान पर जाना है और न ही मैंने पूछा कि कराची में बाबा किस स्थान पर है। स्टेशन पर पहुँचकर मैंने पूछना शुरू कर दिया कि परसों सुबह सफेद कपड़े वाले लोग आए थे, वे किधर गए। स्टेशन पर सभी मेरा मुँह देखने लगे। जानकार लोगो ने कहा कि बच्चे तथा कन्याएँ आदि आए तो थे पर अब कहाँ हैं हमें भी मालूम नहीं। मैं पूरा आधा घण्टा स्टेशन पर चक्कर लगाती रही परन्तु इतने में ही एक भाई दौड़ता हुआ मेरे पास आया। भले ही सीमित शक्ति वाले दो नेत्रों से मैं प्यारे शिव बाबा के कर्त्तव्य स्थान को न देख पा रही थी, न जान पा रही थी परन्तु अनन्त दृष्टि वाले, दिव्य दृष्टि विधाता प्रभु को तो मेरी पल-पल की खबर थी। भागवत में गायन है कि प्रिय भक्त की सच्ची पुकार पर वे नंगे पैर, बिना चप्पल पहने ही दौड़ पड़े थे। मेरे लिए भी प्यारे शिव बाबा ने, ब्रह्मा बाबा के साकार माध्यम द्वारा इस भाई को स्टेशन पर दौड़ा दिया था।

भाई ने कहा कि बाबा भोजन कर रहा था मैं भी बाबा के साथ ही भोजन कर रहा था कि अचानक बाबा ने कहा – आप भोजन बाद में करना, स्टेशन पर जाओ, कोई आया है और बुलावा कर रहा है। भाई की बात सुनकर मैं उसके साथ चल पड़ी। बाबा जितना प्रेम का स्वरूप था उतना ही हमारे भविष्य की सुरक्षा के प्रति जागरूक भी था। सामने जाते ही तुरन्त पूछा – 'पत्र लाई हो?' मैंने कहा – 'कभी बाप के पास पत्र लाया जाता है क्या, बाबा?' बाबा ने फिर मम्मा को कहा कि इनको नहला-धुला कर खाना खिलाओ। रात के भोजन के समय मैंने बाबा को पत्र दे दिया। पत्र देख बाबा निश्चिंत हो गए। बाबा ने कहा कि जब तुम दादाजी से पत्र ले आई हो तो दादा तो घर में बड़ा होता है, अब किसी के विरोध का डर नहीं है। (क्रमशः)

बाबा कहते हैं, ये आँखें धोखा दे देती हैं। सूरदास की कहानी आपने सुनी होगी। उसकी आँखों ने धोखा दिया तो उसने लोहे की सलाखें लेकर अपनी आँखें ही निकाल दीं। कहा कि आँखों ने मुझे धोखा दिया इसलिए उनको निकाल दिया। वास्तव में आँखें धोखा नहीं देतीं, धोखा तो मन देता है। हमें देखना क्या चाहिए? बाबा ने कहा है, एक आँख में मुक्ति, एक आँख में जीवनमुक्ति होनी चाहिए।

मम्मा व बाबा के साथ के अनुभव

– ब्रह्माकुमार निर्वैर, आबू पर्वत





मैं ने मम्मा के साथ छह साल व बाबा के साथ दस साल व्यतीत किये। उस समय मैं भारतीय नौसेना में रेडियो इंजीनियर यानी इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर था। मेरे नौसेना के मित्रों ने मुझे आश्रम पर जाने के लिए राजी किया था। वहाँ बहनजी ने बहुत ही विवेकपूर्ण और प्रभावशाली तरीके से हमें समझाया। चार दिन बाद हमें योग करवाया गया। योग का अनुभव बहुत ही शक्तिशाली व सुखद था क्योंकि हम तुरंत फ़रिश्ता स्टेज में पहुँच गये थे।

शुरू में हमें यह अद्‌भुत-सा लगा कि योग में आँखें खोलकर, भ्रकुटि के बीच में कैसे देखें और मुझे काफी संकोच-सा हुआ परन्तु दो मिनट बाद जब जादुई मंत्र – ''मैं एक पवित्र आत्मा हूँ, शान्त स्वरूप आत्मा हूँ व मेरा संबंध परमपिता परमात्मा से है,'' की पुनरावृत्ति हुई तो मेरा मन बहुत शांत हो चुका था और मेरे लिए यह एक बहुत मीठा अनुभव था। मुझे तो ऐसा लगा कि पूरा कमरा सफेद लाइट से भर गया है। कारपेट भी जो लाल रंग का था, सफेद नजर आने लगा। यह मेरे लिए एक सेमी-ट्रांस का अनुभव था। सेवाकेन्द्र में जाते लगभग चार सप्ताह ही हुए थे कि मम्मा के वहाँ आने का सौभाग्य हमें मिला। हमें उनकी मुम्बई की यात्रा का पूरा-पूरा लाभ मिल सके, उसके लिए उनके विशेष प्रवचनों का प्रबन्ध करवाया गया। प्रत्येक शाम 5 से 6 बजे तक मम्मा की क्लास हुआ करती थी। मुझे यह ज्ञान इतना रमणीक लगा कि मुझे जो कोई भी मिलता था, मैं उससे पूछा करता था कि आपको मन की शांति अनुभव करने की इच्छा है? आप आत्मा व परमात्मा के बारे में जानने के इच्छुक हैं? प्राय: जवाब 'हाँ' ही होता और चूंकि सेवाकेन्द्र पास में ही था, मैं उनको इन्चार्ज बहन जी से मिलवाता था। इस प्रकार एक मास में करीब 40 स्टुडेण्ट हो गये थे और 8 सीनियर स्टुडेण्ट हो गये थे।

ये सब समाचार बाबा को पत्र द्वारा भेजे जाते थे। उन दिनों डाक-विभाग की सेवा बहुत अच्छी थी। प्रति शाम मुम्बई से पत्र लिखा जाता था और अगले दिन मधुबन में मिल जाता था। रोज कोई न कोई रेल में जाकर पत्र छोड़ आता था। दूसरी तरफ, बाबा का भी मुरलियों द्वारा पत्र-व्यवहार बहुत अच्छा चलता था।

मम्मा के मुंबई में रहने से हमारी नींव बहुत मजबूत हो गयी । मम्मा क्लास सीधा नहीं शुरू करवाती थीं। मुरली के पहले योग हुआ करता था जो अपने आप में एक मधुर अनुभव था। हम लोग मम्मा से पूछा करते थे कि आप हमारे मन के प्रश्नों को कैसे जानती हो। वो कहती थीं कि मैं तो सिर्फ योग में बैठती हूँ और जो भी मेरे मन में आता है उसे बोल देती हूँ।

मैं बाबा को रोज पत्र लिखा करता था। हम दोनों ने आपस में ऐसे पत्र

लिखना शुरू कर दिया जैसे कि प्यार होने पर कोई आपस में लिखते हैं। बाबा अपनी कहानियाँ लिख कर मुझे प्रेरित करते थे और मैं बाबा को लिखे बिना रह नहीं सकता था। यदि मैं दो पेज लिखता था तो बाबा मुझे चार पेज लिखा करते थे और मैं यदि चार लिखता तो बाबा छह। बाबा के बारह पेज तक के पत्र भी आये। बाबा के पत्रों में नई मुरलियों के प्वाइंट हुआ करते थे। छह मास बाद मेरा पहली बार मधुबन आना हुआ। मुझे ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाबा से सन्मुख मिलन मनाना था। यह बाबा से मुलाकात इतनी प्रेरणादायक व प्रभावशाली थी कि मैंने अपने भविष्य का निर्णय उसी वक्त ले लिया था।

जब हम बाबा के कमरे में गए तो हमने देखा कि बाबा एक गद्दी पर बैठे हैं और दूसरी तरफ मम्मा बैठी हुई हैं। वहाँ कोई बोलने की बात थी नहीं अत: गहन शांति और बाबा की शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे एकदम अशरीरी बना दिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस दुनिया से दूर कहीं जा रहा हूँ। बाबा के मुख-मण्डल से शांति के प्रकम्पन व लाल प्रकाश की किरणें निकलने का मुझे स्पष्ट अनुभव हो रहा था। यह शक्तिशाली अनुभव किसी भी दुनियावी अनुभव से अलग था।

करीब छह-सात मिनट तक मेरा और बाबा का मन ही मन वार्तालाप चलता रहा। मुझे संकल्प आ रहे थे कि हाँ बाबा, आप अब इस दुनिया को परिवर्तित करने के लिए आ गये हैं। अब तो मैंने आपको साकार में सन्मुख देख लिया है और मेरा यह बाकी जीवन आपको ही समर्पित है। कुछेक क्षणों बाद मुझे ऐसी खींच हुई कि मैं बाबा की गोद में जाकर बैठ गया। बाबा मुरली में कहते भी हैं कि जब तक बच्चे बाबा की गोद नहीं लें, वर्सा प्राप्त नहीं कर सकते। सतयुग का वर्सा तो सभी ब्रह्मा-वत्सों को मिलता है परन्तु यह मेरे लिए साकार बाबा द्वारा संगम का वर्सा था।

मैं बाबा से मिलकर बेहद खुश था। बाबा ने हमसे पूछा कि क्या यात्रा सकुशल व आरामदायक रही? वास्तव में बाबा क्या बोले–यह महत्त्वपूर्ण नहीं था परन्तु बाबा की आवाज सुनने को मन बेहद लालायित था। उन दिनों टेप रिकार्डिंग व वीडियो जैसे साधन नहीं थे। अमृतवेले योग भी नहीं हुआ करता था। सुबह 5:45 पर योग होता था व 6 बजे मुरली शुरू होती थी। क्लास पूरा होने पर हम बाबा व मम्मा से, मम्मा के कमरे में मिलते थे। चूंकि हम बहुत ही कम स्टुडेण्ट थे, हमें रोज बाबा से बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि मिल जाती थी। सोचना भी नहीं पड़ता था। सेकण्ड में नशा चढ़ जाता था और हम खुशी से नाच उठते थे।

बाद में हम भोजन पर अथवा पिकनिक पर जाते थे। कभी-कभी बैडमिन्टन खेलते थे। बाबा कहते थे कि ईश्वरीय जीवन का यह मतलब नहीं है कि हर समय पढ़ते ही रहो, इसका खेल के साथ संतुलन होना चाहिए। शाम को आठ बजे से पौने नौ बजे तक क्लास हुआ करती थी। शुरू में मम्मा वत्सों की रूहानी अवस्था के समाचार पूछती थीं और यह भी पूछती थी कि आपसे कोई गलती तो नहीं हुई? बाबा के आने के पहले करीब 10 मिनट तक मम्मा संबोधित करती थीं।

मैं बाबा से प्रथम बार 1959 में मधुबन में मिला और उसी साल बाबा का मुम्बई आना हुआ। एक सज्जन ने बाबा को एक सुंदर अपार्टमेण्ट, जो मुम्बई के अच्छे इलाके में स्थित था, जब तक चाहें रहने को दिया। इस अवसर पर मैंने नेवी से छुट्टी लेकर कुछ दिन मुम्बई में बाबा के साथ बिताने का निश्चय किया। पचासवें दशक के प्रथम वर्षों में यज्ञ आर्थिक रूप से बड़े ही कठिन दौर से गुजर रहा था। और एक दिन ऐसा भी आया कि भण्डारी में सिर्फ पच्चीस पैसे ही रह गए थे। भोजन खाने वाले काफी लोग थे। तो निमित्त बहन ने बची हुई धनराशि के बारे में बाबा को अवगत कराया। बाबा ने तुरंत कहा कि चिन्ता मत करो, केवल ग्यारह बजे तक इन्तजार करो। ग्यारह बजे डाक आया करती थी। बाबा का विश्वास इतना पक्का था कि वे हमेशा कहा करते थे कि यज्ञ शिवबाबा का है, ब्रह्मा बाबा का नहीं। शिवबाबा

ने ही इसको बनाया है, उसी को इसका संचालन करना है, हमको कोई चिन्ता नहीं है। जब डाक आयी तो उस दिन एक हजार रुपया मनीऑर्डर से आया। बाबा ने दिल से शुक्रिया अदा किया उस आत्मा को जिसने ऐसे वक्त में अपने धन को सफल किया।

मुझे याद है कि वह एक बाँधेली बहन थी जो कि मुम्बई में रहती थी। बाबा समय पर सहयोग देने का रिटर्न कई गुणा देते थे। जब उस माता का युगल सुबह घूमने जाता था तो वो बाबा को फोन लगाती थी और बाबा उसे फोन पर मुरली सुनाते थे। कभी-कभी तो 45 मिनट भी फोन पर लग जाते थे। कुछ भाई-बहनें नियमित रूप से इस टेलीफोन क्लास के नोट्स लेते थे। हम सभी भी नोट्स लेते थे। बाबा को आवश्यकता के समय दिये सहयोग का गहरा अहसास था।

बाबा कहते थे कि बच्चे, जब तक कोई ईश्वरीय सेवा नहीं करो, तब तक आपको नाश्ता नहीं करना चाहिए। तो मैं मुरली खत्म होने के बाद पास के पार्क में सेवा के लिए जाया करता था। एक बार मैंने किसी आत्मा को त्रिमूर्ति के बारे में समझाया, परन्तु जल्दबाजी में गोलमाल करके समझाया। जिसको ज्ञान समझाया, वो क्रिश्चियन थी। उसने ब्रह्मा बाबा की तरफ संकेत करके पूछा कि यह कौन व्यक्ति हैं। मैंने ब्रह्मा, विष्णु व शंकर का परिचय दिया और कहा कि ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा नई दुनिया की रचना करते हैं। परन्तु उस बहन की बुद्धि में यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यह कार्य अभी ही हो रहा है।

जब मैं वापस बाबा के पास आया तो रोज की भाँति, ज्ञान-चर्चा के दौरान जो हुआ वो बाबा को बताया। बाबा सुनकर, ज्ञान कैसे देना चाहिए, यह हमें समझाते थे। इस बात को मैंने जब बताया तो बाबा ने कहा कि तुम्हें बोलना चाहिए था कि सर्वोच्च परमपिता परमात्मा अब ब्रह्मा बाबा के द्वारा ज्ञान दे रहे हैं और यदि तुम ऐसा कहते तो वह आत्मा बाबा से वर्से का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर लेती। मैंने बाबा से क्षमा चाही और अगले दिन एक अन्य बुजुर्ग भाई ने जब यही प्रश्न पूछा तो मैंने ब्रह्मा बाबा का स्पष्ट परिचय देते हुए कहा कि अब इन्हीं के द्वारा परमात्मा ज्ञान सुना रहे हैं। उसने पूछा कि बाबा अब कहाँ हैं? मैंने कहा कि मुम्बई में ही हैं, तो उस आत्मा ने बाबा से मिलने की इच्छा जाहिर की। मैंने कहा कि बाबा से समय लेकर अगले दिन आपको बता देंगे। अगले दिन शाम को वह बाबा से मिलने आया। बाबा ने उसको पास बिठाया और कहा कि आप भी बाबा की तरह ही हो, एकदम पिता की तरह। बाबा का तन भी पुराना है और आपका तन भी बाबा की तरह पुराना है। साधारणतया गुरु लोग अपने चेलों आदि को पास में नहीं बिठाते, परन्तु बाबा ने उसे पास बिठा कर इस बात का अनुभव करवा दिया कि हम दोनों ही ईश्वर के बच्चे हैं। बाबा ने उसे ज्ञान समझाया और उस दिन से वह रोज क्लास करने लगा।

एक बार मैंने बाबा को लिखा कि मैं दो मास के लिए खाली हूँ, आप मुझे सेवा के लिए कहीं भी भेज सकते हैं। साथ ही यह भी लिखा कि मैं एक सेवाकेन्द्र खोलना चाहता हूँ। बाबा जानते थे कि यदि यह कोई सेवाकेन्द्र खोल लेगा तो बंध जाएगा, तो बाबा ने लिखा कि सेवाकेन्द्र खोलने की चिन्ता मत करो। यह कार्य तो अन्य लोग भी कर लेंगे। तुम केवल उनकी संभाल करो जो पहले से खुले हुए हैं। मुझे अब यह अनुभव होता है कि बाबा मेरे भविष्य के बारे में जानते थे और मुझे बंधन-मुक्त रखना चाहते थे।

मैंने अपने लौकिक कार्य का इस तरह से प्रबन्धन किया कि मैं सप्ताह में एक दिन व सप्ताह के अंत में अलौकिक सेवा के लिए समय निकाल लेता। बाबा समाचार-पत्रों की सेवा करने की बहुत युक्तियाँ बताया करते थे इसलिए मैंने छुट्टी के समय समाचार-पत्रों के दफ्तरों में जाकर वहाँ के लोगों से दोस्ती करना शुरू कर दिया। शनिवार को हम लोग पार्क व पर्यटन की विशेष जगहों पर पर्चे बाँटने जाते थे। रविवार को हमें भक्त आत्माओं की सेवा के लिए मन्दिरों में जाना होता था। बाबा कहते थे कि शिव, कृष्ण व लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में

हमें दैवी घराने की आत्माएँ मिल सकती हैं। धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे इतना ही नहीं परन्तु पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में देना चाहिए। उन छुट्टियों में मेरा सेवा के निमित्त जयपुर जाना हुआ। यह अपने आप में एक श्रेष्ठ अनुभव था। लौटते वक्त मैं मम्मा व बाबा से मिला और मैंने लौकिक कार्य छोड़ने की इच्छा जाहिर की; जिससे कि मैं पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में दे सकूँ। मम्मा ने कहा कि यह बहुत अच्छा ख्याल है। एक व्यक्ति को जीवन में चाहिए ही क्या ? दो कपड़ों के जोड़े व दो समय भोजन, जो यज्ञ से मिल सकते हैं।

मैंने सन् 1963 में नेवी छोड़ने का आवेदन दिया। बाबा ने मुरली में कहा था कि यदि आप रोजाना आठ घण्टे योग करते हो तो आप अपने कर्मों के हिसाब-किताब को पूरा चुक्ता कर सकते हो। मैंने इसका प्रयोग शुरू किया और रोज सुबह आठ से बारह बजे तक व शाम को चार से आठ बजे तक योग लगाना शुरू कर दिया। दोपहर के समय मैं मुरली को अन्य भाषाओं में लिखकर बुजुर्ग माताओं को मदद करता था। इस प्रयोग का मुझे सुखद फल मिला और मुझे नेवी से छुट्टी मिल गई। नौकरी छोड़ने के बाद करीब तीन मास तक मुझे बाबा के अंग-संग रहने का अवसर मिला और साथ ही साथ दादा विश्वकिशोर से समय प्रति समय मार्गदर्शन मिलता रहा।

बाबा विशेष अवसरों पर अक्सर सौगात दिया करते थे। यही वजह है कि आज भी मधुबन में कोई आता है तो सौगात अवश्य प्राप्त करता है। एक समय की बात है कि एक बहन अपने युगल के साथ बाबा से मिलने मधुबन आई। यद्यपि वो भाई उस बहन को विशेष सहयोग नहीं देता था फिर भी युक्ति से वह उस भाई को बाबा के पास मधुबन ले आई थी। बाबा उस भाई से मिले और लक्ष्मी-नारायण का चित्र जो सौगात के लिए बनाया गया था उसे अपनी ठोडी के नीचे बड़े प्यार से पकड़कर समझाते हुए बोले – ''मीठे बच्चे, बाबा आप साधारण बच्चों को लक्ष्मी-नारायण जैसा पूज्य बनाने आए हैं। क्या तुम ऐसा बनना चाहोगे ?'' उसने जवाब दिया – ''हाँ बाबा, आप मदद करेंगे तो मैं अवश्य बन जाऊँगा।'' बाबा ने कहा – ''केवल इसी लिए बाबा आए हैं, परन्तु इसके लिए आपको पवित्रता की शपथ लेनी पड़ेगी, क्या आप लेंगे ?'' उसने कहा – ''हाँ बाबा, मैं अवश्य लूँगा।'' बाबा ने तुरंत राखी मँगवाई और एक बहन ने उसको पवित्रता की राखी बाँध दी। उसके बाद बाबा ने लक्ष्मी-नारायण का चित्र सौगात में दिया। ये भाई और उनकी युगल अभी भी मधुबन में आते हैं और कहते हैं कि उसके बाद उनके जीवन में पवित्रता की धारणा सहज ही हो गयी।

जब से मैं मधुबन में हूँ, मुझे यह करीब से देखने का सौभाग्य मिला है कि कैसे दादी जी ने बाबा से जिम्मेदारी ली और कदम-कदम बाबा से श्रीमत ली। जब पहली बार 21 जनवरी, 1969 को अव्यक्त बापदादा आए तो बाबा ने कहा कि शरीर को छोड़ना मात्र कमरा बदलने के बराबर है। बाबा ने कहा कि बाबा बच्चों की सेवा में अभी भी उपस्थित हैं, जैसे पहले थे और यह कभी नहीं सोचना है कि बाबा चले गए हैं। बाबा ने हमें यह विश्वास दिलवाया कि जब तक संगमयुग है, बाबा साथ है, केवल बाबा के रूप का परिवर्तन हुआ है, जब भी आप बाबा के कमरे में बाबा की ट्रांसलाइट की तरफ देखेंगे तो अहसास होगा कि साकार बाबा हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। हमारे अलौकिक परिवार के कार्यों में और बाकी दुनिया के कार्यों में बहुत बड़ा फर्क है। हमें इस बात का स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि यह कोई साधारण मनुष्यों का कार्य नहीं, परन्तु स्वयं शिव बाबा अर्थात् ईश्वर का कार्य है। हमारा संबंध उस ईश्वरीय परिवार से है जो समाज के महानतम व सर्वश्रेष्ठ कार्य के प्रति प्रतिबद्ध है और हम उसमें निमित्त हैं। यदि हमारे अन्दर इस प्रकार का स्वमान जाग्रत रहेगा तो संगमयुग की हर घड़ी सुखदायी बन जाएगी।

▲▲

पुरुषोत्तम संगमयुग – भूगोल तथा संस्कृति के साथ सम्बन्ध

– ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

पिछले लेख में हमने जाना कि मूलवतन, सूक्ष्मवतन तथा स्थूल वतन के संपूर्ण ज्ञान को समझकर ही हम सृष्टि के यथार्थ भूगोल को समझ सकते हैं। भूगोल का इतिहास तथा संस्कृति दोनों के साथ संबंध है। भूगोल, पाँच तत्वों की दुनिया का पूरा दर्शन कराता है, भूगोल का असर पाँच तत्वों के बने शरीर पर भी पड़ता है।

भूगोल का पहला-पहला प्रभाव आबोहवा (climate) पर होता है और आबोहवा का प्रभाव शरीर के ऊपर होता है। मुझे याद है कि एक बार शरद् ऋतु में हम ईश्वरीय सेवार्थ कुल्लू-मनाली गए थे। हमने ठण्ड का सामना करने के लिए दो स्वेटर पहने हुए थे परन्तु वहाँ का एक भाई साधारण कुर्ता पहनकर घूम रहा था क्योंकि वह वहाँ के वातावरण का अभ्यस्त था। आबू पर्वत पर भी विदेशी भाई-बहनों को सर्दी के दिनों में बुलाया जाता है क्योंकि हिन्दुस्तान की सर्दी उनके लिए जैसे कि गर्मी का मौसम है। भारत के गर्मी के मौसम में आना और रहना उनके लिए बहुत कठिन है। एक बार, काफी समय से मधुबन में रहने वाले एक भाई अप्रैल मास में मेरे साथ देहली में थे परन्तु उनसे गर्मी सहन नहीं हुई और वे वापस मधुबन आ गए। एक बार जब दादी जानकी जी मुम्बई में थीं तब रशिया के साईबेरिया (siberia) प्रदेश के ईश्वरीय सेवाकेन्द्र से टेलीफोन द्वारा समाचार मिला कि वहाँ की बहन –32° तापमान पर ईश्वरीय सेवार्थ बाहर जा रही है। भारत में अगर इतनी ठण्ड हो तो अवश्य ही कई बार सोचना पड़ेगा कि कैसे बाहर निकलें। कुछ वर्ष पहले मैं ब्राजील गया तो देखा कि ठण्ड से उत्पन्न बीमारियों से बचने के लिए यूरोप के अमीरों ने वहाँ मकान बनाए हुए थे और आवश्यकता के समय वहाँ आकर रहते थे। इस प्रकार आबोहवा बीमारियों का भी कारण है।

आबोहवा का प्रभाव शरीर के साथ-साथ संस्कृति पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए, गरम प्रदेश में भक्तजन मन्दिर अथवा घर में चप्पल उतार कर जाते हैं, किन्तु ठण्डे स्थानों के निवासियों पर यह नियम लागू नहीं है। वे चप्पल-जूते सहित सभी जगह घूमते हैं। एक बार इंग्लैण्ड में हम विन्डसर कैसल (Windsor Castle; किला) देखने गए। वहाँ पर गाइड ने बताया कि इस किले में एक भी स्नानगृह नहीं है क्योंकि ठण्ड के कारण कई लोग तो कई सालों तक स्नान नहीं करते थे, प्रातः उठकर सिर्फ अपना मुख धुलाई कर देते और 6-8 मास तक वही गरम कपड़े पहनकर रखते थे। जबकि गरम प्रदेश में रहने वाले लोगों की संस्कृति ऐसी है कि सबको रोज़ स्नान करना है और धुलाई किये हुए स्वच्छ कपड़े पहनने हैं।

लंदन के एक भाई ने, जो ईश्वरीय विद्यालय का नियमित विद्यार्थी है, बताया कि मुझे अपना कमरा खाली करना पड़ेगा क्योंकि मैं सुबह स्नान करता हूँ जिससे पानी गिरने की आवाज़ से पड़ोसियों को तकलीफ होती है। उन्होंने नगरपालिका से निवेदन किया और नगरपालिका ने मुझे आदेश दिया कि आप आठ बजे से पहले स्नान नहीं कर सकते। भारत में ऐसे पड़ोसी ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेंगे। पुराने जमाने में यातायात के साधन बहुत कम थे तब संस्कृति का निर्माण नदियों के

आधार पर हुआ। उत्तर प्रदेश में गंगा के उत्तर और दक्षिण में रहने वालों की संस्कृति और बोली में काफी अन्तर दिखाई पड़ता है। गुजरात में भी नर्मदा नदी के उत्तर और दक्षिण में रहने वालों की संस्कृति में फर्क है। इस नदी के उत्तर में रहने वाली आदिवासी माताएं गुजरात की माताओं की तरह साड़ी पहनती हैं और दक्षिण तरफ रहने वाली आदिवासी माताएं महाराष्ट्र की माताओं की तरह धोती पहनती हैं। विदेश की दवाई बनाने वाली एक कंपनी ने शक्तिवर्धक दवाई विदेश में बेची परन्तु भारत में उसे बेचने के लिए उसके गुण-धर्म में परिवर्तन करना पड़ा क्योंकि यहाँ की आबोहवा दूसरी है। विश्व में आबोहवा के इस परिवर्तन को समझकर हम चारों युगों में घटने वाले आबोहवा के परिवर्तनों को भी अच्छी तरह समझ सकते हैं।

सतयुग में, आज की तरह गर्मी-सर्दी के मौसम नहीं होते। वहाँ विषुवत् रेखा या भूमध्य रेखा (Equator) पर भी समशीतोष्ण आबोहवा होती है। उसी के कारण वहाँ पर फल और अन्न बहुत होता है। वर्तमान में तो गर्मी-सर्दी के तापमान में बहुत अन्तर होता है, जिसके कारण मनुष्य के स्वभाव में भी काफी चढ़ाव-उतराव होता है। किन्तु सतयुग में सदा बहारी मौसम होने के कारण सबके स्वभाव भी एकरस होते हैं और इसलिए वहाँ की संस्कृति भी एकरस ही होती है। सतयुग में जमीन पूर्ण रूप से उपजाऊ होती है। वहाँ पर कम मेहनत में बहुत ही अन्न उत्पन्न होता है। सौ प्रतिशत समृद्धि होने के कारण वहाँ चोरी आदि नहीं होती है।

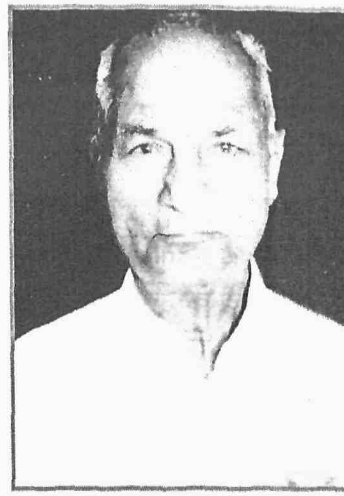
आज से 60-70 वर्ष पहले आफ्रीका के युगान्डा आदि देशों में भारत के लोग गए। वहाँ के आदिवासियों ने कभी खेती नहीं की थी परन्तु वहाँ भारत के लोगों ने कम मेहनत में अन्न का बहुत उत्पादन किया और जल्दी ही आर्थिक उन्नति कर ली। अमेरिका में भी कैलिफोर्निया राज्य की आबोहवा समशीतोष्ण है, वहाँ पर उपज की आमदनी न्यूयार्क जैसे ठण्डे प्रदेश की खेती की आमदनी से ज़्यादा होती है। इसलिए वहाँ के किसान न्यूयार्क की भेंट में ज़्यादा समृद्ध हैं। मध्यकाल में, भारत जैसे गरम देश में मिर्च-मसाले पैदा होते थे और बंजारे लोग इस प्रकार की चीज़ों को बेचने के लिए दूर-दूर भ्रमण करते थे। इस प्रकार, आबोहवा का धन्धे और व्यापार पर भी प्रभाव पड़ता है।

सतयुग के बाद पृथ्वी धीरे-धीरे अपनी धूरी पर झुकती गई, भूमध्य रेखा की आबोहवा में परिवर्तन हुआ और मानव समाज धीरे-धीरे उत्तर-दक्षिण ध्रुव की ओर प्रस्थान करता रहा। इस कारण पश्चिम के इतिहासकारों ने यह बताया कि संस्कृति का उद्‌गम अर्थात् आदि स्थान मध्य एशिया है और वहाँ के रहने वाले ही सच्चे आर्य थे। उन्हीं आर्यों में से ही कई यूरोप में गए और कई भारत की तरफ आए। इस प्रकार, सतयुग की संस्कृति का उद्‌गम स्थान भारत के बदले मध्य एशिया मान कर बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूल की।

भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर कई बार भ्रान्त कल्पनायें भी रची जाती हैं। दैवी परिवार का एक भाई जब कॉलेज में पढ़ता था तो उसके प्रोफेसर ने सृष्टि के पदार्थों के निर्माण की तिथि-तारीख के बारे में बताया और एक पत्थर दिखा कर कहा कि यह 3000 वर्ष पुराना है। उस भाई ने उस पत्थर के दो छोटे-छोटे टुकड़े किये और एक टुकड़े को तेजाब (Hydrocloric Acid) में 24 घंटे रखा। बाद में एक मास तक जमीन के अंदर भी गाड़ कर रखा ताकि पत्थर पर तेजाब का जो प्रभाव हुआ था, वह निकल जाए। एक मास के बाद भाई ने अपने प्रोफेसर को पत्थर दिखाया और उसकी आयु

शेष पृष्ठ....27 पर

भगवान ने कहा – तुम सम्पूर्ण योग्य हो



– ब्रह्माकुमार देवशरण, शान्तिवन

मेरा लौकिक जन्म सन् 1918 में गोरखपुर ज़िले के पडरौना गाँव में हुआ। बाल्यकाल से ही मैंने श्रीमद्भगवदगीता, रामायण आदि ग्रन्थों को बड़ी रुचि से पढ़ना आरम्भ कर दिया था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय सन् 1941 में भारतीय सेना में भर्ती हो गया। रणक्षेत्र में भी मैं नियमित रूप से पूजा-पाठ करता रहा तथा धार्मिक पुस्तकों का भी अध्ययन करता रहा। कुछ ही समय के बाद मेरी नियुक्ति ईराक मोर्चे पर हो गई। तीन साल वहाँ रहा और भक्ति-पूजा का क्रम भी मैंने वैसे ही बनाए रखा।

नवम्बर, 1957 का एक परम सौभाग्यशाली दिन ऐसा आया जिसने मेरी जीवनधारा को मोड़ दिया और अविनाशी भाग्य का द्वार खोल दिया। मैं दिल्ली कैंट में तैनात था। हवलदार महेन्द्र सिंह मिलिट्री द्वार से जल्दी-जल्दी बाहर जा रहे थे। मैंने पूछा तो कहने लगे कि ब्रह्माकुमारी आश्रम में सत्संग सुनने जा रहा हूँ। मैं भी उनके साथ चल पड़ा तो देखा कि राजौरी गार्डन के बगीचे में 30-40 बहनें-भाई शान्ति में बैठ कर सामने बैठी दो दिव्य बहनों (दादी प्रकाशमणि व दीदी मनमोहिनी) से दृष्टि ले रहे थे। मुझे ऐसे लगा कि ये बहनें जानी-पहचानी हैं और इन दोनों को पहले भी कहीं देखा है। ऐसा सोचते-सोचते ज्ञान-योग का वह सत्र पूरा हो गया। मैं घर आ गया। पूरी रात मन के परदे पर मुझे वही बहनें दिखती रहीं। दूसरे दिन फिर आश्रम गया और बहन जी के नजदीक जाकर गौर से देखने लगा। बड़ी बहन जी ने मुस्करा कर पूछा कि क्या नशा करते हो? मैंने 'हाँ' करते हुए सत्य बता दिया। उस वक्त मेरे मुख से शराब की बदबू आ रही थी। बहन जी बोली तो कुछ नहीं पर उनकी स्नेह भरी ममतामयी दृष्टि जैसे कह रही थी – "बुरी चीज़ है, छोड़ दो।"

हज़ारों हज़ार भाषण और प्रवचन जो कार्य नहीं कर सकते वह कार्य उनकी पल भर की शुद्ध स्नेहमयी दृष्टि ने कर दिया। व्यसनों की जो बीमारी सैंकड़ों कसमें उठाने पर भी नहीं छूट पा रही थी उसे मैंने घर आकर सेकण्ड में तिलांजलि दे दी। मैंने घर आते ही शराब की बोतलें तथा 20 पैकेट सिगरेट के अग्नि में स्वाहा कर दिए। मेरी युगल (शान्ति माता) यह सब देख फूली नहीं समा रही थी। रविवार छुट्टी के दिन हम दोनों प्रात: 5 बजे ही क्लास में पहुँच गए। वहाँ पता चला कि जगदम्बा सरस्वती (ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका) वहाँ आई हुई हैं। सभी ब्रह्मा-वत्स खुशी से झूम रहे थे। हमने भी मम्मा की मधुर वाणी सुनी जिसमें अलौकिक आकर्षण और नशा था। फिर मैंने देखा कि बड़ी बहनें और भाई सभी मम्मा की गोदी में जाकर उनसे लिपट रहे थे। मेरा भी बहुत दिल हो रहा था माँ की गोद में जाने का लेकिन मैं हिम्मत नहीं कर सका।

कई भाई-बहनें पूछते हैं कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का खर्चा कैसे चलता है। मैं पाठकगण को

बताना चाहता हूँ कि नशे की आदत के कारण मेरी तनख्वाह का 25% पैसा बर्बाद हो जाता था परन्तु बहनों की दिव्य और स्नेहमयी दृष्टि ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला था कि नशे की आदत समूल नष्ट हो गई। उसी क्षण मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि मुझे इतनी शक्ति इन पवित्र बहनों से मिली है इसलिए नशा छोड़ने से जो बचत हुई है, उसे इस संस्था की सेवा में लगाऊँगा। लेकिन कैसे लगाऊँ, इस बारे में मुझे ज्ञान नहीं था। एक दिन मैंने देखा कि पुराने ब्रह्मा-वत्स आपस में मंत्रणा कर रहे थे कि मम्मा पहली बार दिल्ली सेवा पर आई हैं और चावल की बड़ी समस्या है क्योंकि उन दिनों चावल अमेरिका से आता था और राशन कार्ड पर मिलता था। मुझे एक सुन्दर अवसर मिल गया। मैं बड़ी बहन जी के पास गया और कहा कि आप चाहें तो मैं चावल का प्रबन्ध कर सकता हूँ। बहन जी सिर्फ मुस्कराई। मैंने मुस्कराहट में समाए हुए स्वीकृति के भाव को समझ लिया और मिलिट्री के हम पाँच भाई ब्रह्मा-भोजन का सारा सामान ट्रक में भर कर ले आए। वह ब्रह्मा-भोजन सबने बड़े प्यार से खाया। इससे पहले मुझे मम्मा की गोद में जाने की हिम्मत नहीं होती थी लेकिन ब्रह्मा-भोजन खाते ही बाबा मेरा, मम्मा मेरी हो गई। इस प्रकार व्यसनों में खर्च होने वाला 25%पैसा ईश्वरीय सेवा में लगने लगा। जो पैसा जहर बन रहा था वही अमृततुल्य हो गया।

अगले दिन ब्रह्मा बाबा के आने की खबर सुन कर मैं अन्य ब्रह्मा-वत्सों के साथ उन्हें ले आने के लिए स्टेशन पर पहुँच गया। बाबा के गाड़ी से उतरते ही सब बच्चे उनसे लिपट रहे थे। मैं भी बाबा से लिपट गया और ऐसा महसूस करने लगा कि जैसे बाबा सारी दुनिया को अपनी बाँहों में समेट लेंगे। उनके पवित्र नैनों से परमात्म प्यार छलक रहा था। अलौकिक पिता के प्यार का वर्णन कौन कर सकता है –"गिरा अनयन नयन बिनु वाणी" अर्थात् वाणी को नयन नहीं हैं और नयनों को वाणी नहीं है। बाबा के माध्यम से बिना प्रयास ही हरि (भगवान) मिल गए। प्यारे मम्मा-बाबा और ब्राह्मण परिवार को पाकर ऐसा लग रहा था कि जैसे मेरे जन्म-जन्म के सोए भाग्य जाग गए हों।

सबको बहलाकर, ज्ञान-योग से भरपूर करके बाबा लौट गए और उनके जाने पर ब्रह्मा-वत्सों का जो मेला लगा था, वह भी पूरा हो गया। उसी समय मेरा स्थानान्तरण इलाहाबाद में हो गया। अभी तक तो मैं मात-पिता और परिवार के मिलने की खुशी में ही झूम रहा था। मुझे ज्ञान-योग और ईश्वरीय प्राप्ति के बारे में कुछ पता नहीं था। मैंने बहन जी को अपने स्थानान्तरण के बारे में और वहाँ आने वाली भोजन की कठिनाई के बारे में बताया। आश्रम पर सृष्टि-चक्र तथा कल्प-वृक्ष का चित्र लगा था। बहन जी ने तीन दिन लगा कर ये चित्र, सहज राजयोग, ज्ञान की धारणा तथा बाबा की मुरली के बारे में विस्तार से समझाया और यह भी कहा कि नियमित मुरली पढ़ोगे तो समस्याओं का समाधान स्वत: मिलता रहेगा। इसके बाद मुरली, दो-तीन चित्र और रास्ते का भोजन देकर बहन जी (दादी प्रकाशमणि जी) ने बड़े प्यार से मुझे इलाहाबाद के लिए विदा किया। इलाहाबाद में फेमिली क्वार्टर खाली नहीं था। सूबेदार साहब ने मेरे लिए एक मकान किराए पर ले लिया था और रात को उस मकान में रहने की इजाजत भी दे दी थी। मैं सुबह ड्यूटी पर आता तो मुरली साथ में ले आता था और दूसरों को भी सुनाता रहता था। धीरे-धीरे पाँच अच्छे पढ़े-लिखे भाई ईश्वरीय ज्ञान समझने लगे और प्रतिदिन ज्ञान-योग की क्लास होने लगी। थोड़े दिनों के बाद मिलिट्री परिसर के अन्दर फेमिली क्वार्टर मिल गया और उसमें क्लास होने लगी। आस-पास के बच्चे

मुझे प्यार से बाबा-बाबा कहने लगे। परन्तु ज्ञान की गहराई न समझने के कारण कई पड़ोस की बहनें अपशब्द भी बरसाती थीं कि 'मुआ कहाँ से आया है, सबको खराब करेगा। होली के दिन मैं कबाड़ी की दुकान से एक पुराना ग्रामोफोन और एक रिकार्ड ले आया। आँगन में संदली डाल कर युगल शान्ति को योग में बिठाया और वे तीन बहनें भी (जो अपशब्द बोलती थीं) कौतुहलवश सामने बैठ गई। जैसे ही एक गीत बजा, शान्ति माता के साथ वे तीनों बहनें भी दिव्य साक्षात्कार करने लगीं। उन्होंने धर्मराज की सजाएँ, भीषण भूकम्प से सारी दुनिया का दहलना, आग का गोला तथा अन्य विनाश के दृश्य देखे। परन्तु इसके बाद तुरन्त ही दृश्य बदल गया और वे नई दुनिया के नजारों को देखते हुए मिल कर रास करने लगीं। हम सभी जानते हैं कि दिव्य दृष्टि की चाबी तो दयानिधि परमपिता परमात्मा शिव के पास ही है और वे ही अपने बच्चों को निश्चयबुद्धि बनाने के लिए उन्हें सतयुगी सृष्टि के नजारे दिखाते हैं। परन्तु स्थूल नेत्रों से देखने वाले इन बातों को समझ नहीं पाते हैं और संशय उठाते हैं।

इस घटना के बाद कम्पनी कमाण्डर के सामने कुछ लोगों ने शिकायत की कि मैं जादू करता हूँ और पढ़े-लिखे लोगों को भी बेवकूफ बनाता हूँ। कमाण्डर पहले तो गर्म हुआ पर मेरी शीतल दृष्टि पड़ते ही शान्त हो गया। मैंने उन्हें ईश्वरीय साहित्य दिया और समझाया तो कहने लगा कि बातें तो अच्छी हैं पर लोग खिलाफ क्यों हो रहे हैं? फिर बोले कि मन्दिर में बैठ समझाओ तो सभी खुश हो जायेंगे। लेकिन आज का मनुष्य बात की तह तक जाने से पहले हल्ला मचाने में माहिर है। मन्दिर के सेवाधारी ने जब हमें वहाँ योग में बैठे देखा तो वह कॉलोनी में जाकर चिल्लाया कि क्रिश्चियन लोग बिना पूछे मन्दिर में घुस गए हैं और मन्दिर भ्रष्ट हो गया है। एक विवाद का वातावरण बन गया परन्तु मैंने रामायण की चौपाई सुना कर सबको शान्त कर दिया। मैं सब सेवा समाचार प्यारे ब्रह्मा बाबा को भेजता रहता था। प्यारे बाबा मुझे गोल्डन पत्र लिखते थे कि कमाण्डर से बोलो कि सी.ओ.डी (C.O.D.) को जी.ओ.डी. (G.O.D.) अर्थात् परमात्मा पढ़ा रहा है।

बाबा के निर्देश पर दादी निर्मलशांता जी हमारी हिम्मत बढ़ाने आईं और वहाँ जंगल में मंगल देख कर दादी ने बाबा को बहुत ही सुन्दर समाचार सुनाया। इसके बाद मैंने शहर में जाकर सेवाकेन्द्र के लिए एक मकान पसन्द किया। मकान मालिक ने शर्त रखी कि पहली तारीख से पहले 1 मास का अग्रिम किराया 80 रुपए मेरे पास जमा करा दो, नहीं तो मकान किसी दूसरे को दे देंगे। उस दिन 29 तारीख थी और मेरी तनख्वाह मात्र 84 रुपए थी। अब क्या किया जाए लेकिन जब मैं ड्यूटी पर आया तो कम्पनी कमाण्डर ने मुझे मिलिट्री मैस का चार्ज लेने को कहा। पुराने मैस इंचार्ज ने मुझे चार्ज में 80 रुपए दिए जो कि दूसरे दिन नए मैस कमाण्डर को देने थे। मुझे मुँह माँगी मुराद मिल गई। तीस तारीख को वे अस्सी रुपये मकान मालिक को देकर मैंने मकान ले लिया और पहली तारीख को तनख्वाह मिलने पर मैस कमाण्डर को भी 80 रुपये जमा करा दिए। इस प्रकार, गरीब निवाज भोलेनाथ शिव बाबा ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। इसके बाद शहर में पर्चे बाँटे गए। अनेक बाबा के बच्चे क्लास में आने लगे। इसके बाद राजयोगिनी गंगे दादी ने इलाहाबाद के सर्वप्रथम सेवाकेन्द्र का विधिवत् उद्घाटन किया।

मिलिट्री सेवा काल के दौरान मेरा एक फेफड़ा निकाल दिया गया और मुझे 70% अयोग्य घोषित करके 1963 में सेवामुक्त कर दिया गया।

सन् 1977 में 60 वर्ष की आयु में मुझे मधुबन सेवा के लिए बुला लिया गया। मैं इसी सोच में था कि मैं क्या सेवा करूँगा। लेकिन मुलाकात के समय अव्यक्त बापदादा ने मुस्कराते हुए कहा – "आप अपने को बूढ़ा तो नहीं समझते? सरकार ने आपको 70% अयोग्य घोषित किया है पर बापदादा ने 100% योग्य बना दिया है। आपको तो अन्त समय तक सेवा करनी है।" फिर मुझे एक पुराना ट्रक दे दिया और उसके द्वारा मैं आबू रोड से सब्जी, पार्सल आदि लाने की सेवा करने लगा।

एक दिन चार बजे अव्यक्त बापदादा से टोली लेकर सेवा पर जाने के लिए ट्रक को चालू किया ही था कि बाबा का बुलावा आ गया। बाबा के पास गया तो प्यारे बाबा ने पूछा – "कहाँ जा रहे हो?" मैंने कहा – "बाबा, मैं रोज इसी समय सब्जी, पार्सल और मकान का सामान लेने आबू रोड जाता हूँ।" तब प्यारे बाबा ने सेवा के बारे में मुझे बहुत बातें समझाईं और यह भी कहा कि देखो आपकी कितनी कमाई जमा हो रही है। फिर उनके सामने जितनी प्रकार की टोली रखी थी, वह सब मुझे खिलाई और बची हुई साथ में दे दी और कहा कि ले जाओ, बाद में खाना। उस समय बाबा ने मुझमें इतनी शक्ति भर दी जो आज 87 वर्ष की उम्र होने पर भी कम नहीं हुई है। अभी भी मैं 16 घण्टे कार्य कर सकता हूँ। सदा बाबा का साथ और हाथ अपने संग समझता हूँ। बाबा की महिमा के गीत गाता रहता हूँ और खुशी में नाचता रहता हूँ।

✱✱

मुबारक पदमगुणा

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

परिवर्तन के परिवेश में, नवीनता का वेश लिए,
पावनता के विचित्र देश में, दुआएँ कुछ खास लिए।
लो देखो! संगमयुग में एक कदम और बढ़ा,
आओ नव वर्ष! मुबारक पदम गुणा!
नव वर्ष दुआ वर्ष!!

दृष्टि से सृष्टि की नव रचना में, लाइट का मुकुट सजे,
शुभ संकल्पों, शुद्ध हावों-शुद्ध भावों से,
सफलता का हार गले।
नव युग के प्रणेता का आगमन हुआ,
आओ नव वर्ष! मुबारक पदमगुणा!
नव वर्ष दुआ वर्ष!!

न हीरा न मोती, मनसा सुख से संतुष्ट होती,
ज्ञान-रत्न श्रृंगार हुआ जो,
अतीन्द्रिय आनन्द में आत्मा सोती।
इसी संतुष्टता में जीयरा हमारा पला बढ़ा,
आओ नव वर्ष! मुबारक पदमगुणा!
नव वर्ष दुआ वर्ष!!

नवीनता नव वर्ष की, प्रवीणता रूहे कर्म की,
उमंग हर वर्ग की, सत्प्रेरणा इस वर्ष की।
आओ मिलकर करें बाप प्रत्यक्ष!
नव वर्ष दुआ वर्ष!!

ऐसे थे साकार में बाबा हमारे

– ब्रह्माकुमार शिव कुमार, पाण्डव भवन (दिल्ली)



साकार बाबा पारस के समान थे, उनके संग में रहने वाले भी पारस बन जाते थे। वे हर एक की विशेषताओं व गुणों को ही देखते थे तथा विशेषताओं के आधार पर ही आगे बढ़ाते थे। बाबा कहते थे – "बच्चे, संस्कारों को नहीं देखना, संस्कारों को देखने से संस्कार अन्दर चले जाते हैं। विशेषताओं को देखने से विशेषताएँ भरती जाती हैं।" पहले मधुबन में जब पार्टियाँ आती थीं, तो उनकी देख-भाल व ठहरने की व्यवस्था पिताश्री करते थे। वे रात्रि सोने से पूर्व सभी मेहमान बच्चों का हाल-चाल उनके कमरों में जाकर मालूम करते थे। मुझे भी बाबा ने सभी कमरों में खुशबूदार सामग्री लोहबान-गुगल आदि जलाने का कार्य दिया। मधुबन में आज से लगभग 42 वर्ष पूर्व नये मकानों में बिजली नहीं थी, स्वयं बाबा ने मुझे लालटेन साफ करना व जलाना सिखलाया। साफ करते समय लालटेन का शीशा टूट जाता था। पिता श्री कहते थे – "ध्यान रखना, टूटे नहीं, पर दुबारा भी नुकसान हो जाता तो बाबा समझाते थे कि यज्ञ का नुकसान होने से बचाना माना अपना भाग्य जमा करना। बिजली की बचत करना माना बिजली का उत्पादन करना।"

बाबा कहते थे – "बच्चे, जब भी किसी को समझाओ तो शिव बाबा की याद में रह कर समझाओ तब तीर लगेगा (असर होगा)।" इस प्रकार, बाबा बच्चों को उमंग-उत्साह में लाते थे जिससे कि स्थिति और सेवा दोनों ही आगे बढ़ें। एक बार बाबा ने मुझे सुरक्षा का कार्य दिया और कहा कि देखो, यह बाबा भी तो विश्व-रक्षक है। आपको भी यज्ञ-रक्षक बन यज्ञ की रक्षा करनी है। बच्चे, पहरा देते समय शिव बाबा को याद करने का अच्छा अवसर है, याद का चार्ट भी लिख कर दिखाना। मैंने जब चार्ट लिख कर दिखाया तो बाबा ने उस पर हस्ताक्षर करते हुए लिखा – "बहुत अच्छा।" बाबा कहते थे – "बच्चे, याद करते-करते पक्का अभ्यास हो जाएगा तो स्थिति ऊँची बन जायेगी, यदि कोई व्यक्ति कुछ करने भी आयेगा तो बाबा उसे डरावना साक्षात्कार करा देगा और वह भाग जाएगा।"

बाबा का सदैव यही उद्देश्य रहा कि हर मानव हृदय की गहराई में जाकर अपने अन्दर छिपी हुई, सोई हुई शक्तियों को जागृत करे। हर एक बच्चा हीनता व छोटे विचारों से ऊपर उठ कर प्रगति की मंजिल की ओर बढ़े। बाबा, अंतिम वर्ष में जब कर्मातीत अवस्था के बहुत नजदीक थे, तो बहुत ही उपराम रहने लगे थे। हमने देखा कि बाबा बहुत अधिक समय तक एकान्त में मगन अवस्था का अभ्यास करते थे और बच्चों को भी कहते थे – "बच्चे, मधुबन में बहुत बड़ी-बड़ी छतें हैं। छत पर बैठ करके या पैदल करते हुए एकान्त में मगन अवस्था का अनुभव करो।" एक बार एक बच्चा बाबा के पास आया। बाबा ने उससे पूछा – "बच्चे नींद आई ?" उसने कहा – "हाँ बाबा, अच्छी नींद की।" यह सुन कर बाबा ने उससे कहा – "बच्चे, मेरे भक्त पुकार रहे हैं दु:खों से छुटकारा पाने के लिए, एक सेकण्ड के दर्शन के लिए, क्या आपको उनकी करुणा भरी पुकार सुनाई नहीं देती ? अत: सवेरे-सवेरे उठ कर याद में बैठेंगे तो शक्तिशाली अनुभूति करेंगे और करा सकेंगे।"

शक्तिप्रदायक स्मृतियाँ

साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से धरती पर पधारे भगवान के दिव्य कर्त्तव्यों को देखने, अनुभव करने तथा आत्मसात करने का पदमापदम सौभाग्य भ्राता ओमप्रकाश बजाज जी ने प्राप्त किया है। आप, युवावस्था में, समाज की स्थिति श्रेष्ठ बनाने के लक्ष्य से किसी ऐसी संस्था की खोज में थे जिसके माध्यम से असहायों, पीड़ितों, परित्यक्तों का भला किया जा सके। सौभाग्य से आप ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आए और आपको मुँह माँगी मुराद मिल गई। प्रजापिता ब्रह्मा के उदाहरणमूर्त जीवन से आलोकित पथ पर आप जन-जन के कल्याणार्थ बढ़ चले। पाठकों को दिव्य अनुभवों का रसास्वादन आप अपनी ही लेखनी से करा रहे हैं।



–सम्पादक

वे आत्माएँ जिन्होंने सन् 1937 से ही शिव पिता को साकार रूप में देखा, उनके दिव्य चरित्रों का दिव्य आनन्द लिया, तन और मन की सशक्त पालना प्राप्त की, महान भाग्यशाली हैं। निराकार भगवान अपने निर्धारित मानवीय रथ में प्रवेश कर जब आत्माओं से मिलते हैं तो उनसे मिलन मनाना और याद करना सहज हो जाता है।

मैंने शिव पिता के साकार माध्यम पिताश्री जी से सन् 1960 में भेंट की। ज्ञान-प्राप्ति के तुरन्त पश्चात् मेरी इच्छा प्रबल हो उठी थी कि मैं उस व्यक्तित्व के दर्शन करूँ जिसमें स्वयं परमात्मा अवतरित हुए हैं। उन दिनों हापुड़ में एक समूह विशेष द्वारा ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विरुद्ध हंगामा किया गया था। केन्द्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने सी.बी.आई. के माध्यम से विद्यालय के अनेक सेवाकेन्द्रों पर लगाए गए आरोपों की जाँच की थी। दिल्ली से माउण्ट आबू के लिए मैं जब रवाना हुआ तो दिल्ली सेवाकेन्द्रों के प्रमुख विद्यार्थी चाचा आनन्द जी ने पिताश्री के लिए मौखिक संदेश दिया कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय पर घोर संकट आया हुआ है, ऐसी स्थिति में आपका मार्गदर्शन अपेक्षित है। मैं जब आबू पर्वत पर पहुँचा तो एक भील मेरा सामान लिए मुझे आश्रम तक ले गया। आश्रम के समीप जाते ही मैंने पाया कि एक घने वृक्ष के नीचे पिताश्री 25-30 सफेद वस्त्रधारियों के साथ खड़े रूहानी दृष्टि प्रदान कर रहे हैं। किसी की थी विदाई और मेरा था रूहानी मिलन। विदाई के पश्चात् आश्रम लौटते समय पिताश्री की दृष्टि मुझ पर पड़ी। मैं मिलने के तौर-तरीके से अनभिज्ञ था। तभी रूहानी दृष्टि की अलौकिक कशिश ने मुझे खींचा और क्षण भर बाद मैंने अपने को उन की विशाल स्नेह भरी बाँहों में पाया। अति स्नेह से बाबा ने मुझे अपने साथ ले लिया। मैं भी फरिश्तों की महफिल में शामिल होकर अपार आनन्द को समेटे हुए हँस की तरह बाबा के साथ चलने लगा। किसी ने मेरे कान में कहा – भाई, तुम बहुत खुशनसीब हो जो भगवान स्वयं आप के स्वागत के लिए आश्रम से बाहर चल कर आए हैं। सुनते ही मैं अपार खुशी में डूब गया। मैंने बाबा से कहा कि मैं बिना ब्राह्मणी (गाइड) के आया हूँ। बाबा मुस्करा कर बोले –"तुम्हारी ब्राह्मणी बाबा है।"

ब्रह्मा बाबा मुझे सीधा निजी कमरे में ले गए जहाँ उनके विश्राम का पलंग था और जमीन पर बच्चों से मिलने की गद्दी थी। यह कमरा आज भी दर्शकों के लिए दर्शनीय और तपस्वियों के लिए तपस्या-स्थल बना हुआ है। बाबा ने मुझे अपने पलंग पर बिठाया और स्वयं पिता के रूप में मेरे साथ बैठ गए। बात-चीत प्रारम्भ हुई। बात करते-करते हम पलंग से उतर नीचे गद्दी पर आ गए। पहली

मुलाकात की लम्बी बात तो मुझे पूरी याद नहीं है मगर एक संस्मरण अभी भी मेरे हृदय-पटल पर अंकित है। मैंने हापुड़ से सम्बन्धित चाचा आनन्द जी का संदेश घबराहट की स्थिति में, चिंताजनक लहजे में बाबा को सुनाया परन्तु बाबा के मुखमण्डल पर मुस्कराहट भरी, निर्भय और निश्चिन्त रेखाओं की झलक थी। बात को सुनने का तरीका सहज और पहाड़ को राई बनाने वाला था। समाचार सुनकर पिताश्री मुस्कराते हुए बोले – ''बच्चे, यह कुछ नहीं है, बाबा ने ऐसे तूफान हैदराबाद में अनेक देखे। बाबा एक टेलीफोन करते थे और सब ठीक हो जाता था। यह शिव बाबा का कार्य है, यह वाणी बाबा थोड़े ही बोलता है। बोलने से पहले बाबा सोचता थोड़े ही है। शिव बाबा को जो बोलना या बुलवाना होता है, बोल कर चला जाता है, जिस का काम है उसको चिंता है, बाबा तो निमित्त मात्र है।''

इन विश्वास भरे स्वरों ने मेरे मन का बोझ हल्का कर दिया। मैं 10 दिन तक रहा। मुम्बई से नलिनी बहन आदि का परिवार आया हुआ था। ज्ञानचर्चा और सुन्दर दिनचर्या में अच्छा समय बीतने लगा। एक दिन बाबा मुझे आश्रम में लगे झूले के पास ले गए। मुझे साथ बिठा कर सखा के रूप में झूलने लगे। मथुरा आदि स्थानों पर श्री कृष्ण की मूर्ति को झुला कर भक्त अपार आनन्द प्राप्त करते हैं मगर साकार भगवान के साथ बैठ कर मुझे जो झूलने का आनन्द प्राप्त हुआ वह मेरी खुशी का अमर झूला बनकर रह गया है।

बाबा प्रत्येक बच्चे की लौकिक हैसियत को देखते हुए सुविधा प्रदान करने का ख्याल रखते थे। वे चाहते थे कि छोटी-सी असुविधा भी अमीर आदमी को दिक्कत न करे और वह अन्दर-ही-अन्दर बेआरामी न महसूस करे। कठिन परिस्थितियों से तालमेल बिठा कर चलने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा नाज़ुक व्यक्तियों का अधिक ध्यान रखते थे बाबा। अल्पबुद्धि इस राज़ को न समझने के कारण इस सम्बन्ध में प्रश्न भी उठाते हैं।

बाबा गरीबों से बहुत गहरा प्यार करते थे। वे कहते थे – ''**गरीब है अमीर से बेहतर जो खाता है मेहनत का खाना। शिव बाबा गरीब निवाज है। आज का गरीब बाबा के अमीर राज्य का शीघ्र अधिकारी बन सकता है।**''

एक बार मेरे द्वारा लाए गए सेबों का जब बाबा ने भाव पूछा तो मैं इसके पीछे छिपे ईश्वरीय रहस्य को समझ न सका और सेब का भाव बताने में संकोच महसूस करने लगा। बाबा पुचकारते हुए बोले – ''बाबा बच्चों को सिखाना चाहते हैं कि सेब की कौन-सी किस्म अच्छी होती है और उसे किस भाव तक खरीदना उचित है।'' बाबा ने मुझे शिमला और कश्मीर के सेब दिखाते हुए उनकी बनावट और स्वाद आदि की पूरी जानकरी दी। मैं समझ गया कि भगवान उस्ताद व्यवहारिक और रूहानी ज्ञान के आधार से जिन्दगी को श्रेष्ठतम बनाने की कला सिखाना चाहते हैं। बच्चों के जीवन में निपुणता और कुशलता का समावेश कर के श्रेष्ठ इंसान के दर्जे पर पहुँचाना चाहते हैं।

एक बार सर्दी के मौसम में सारे मधुबन में हम दो अतिथि थे, एक मैं और दूसरा लुधियाना से आया हुआ जगदीश भाई। निर्वैर भाई के कार्यालय के सामने वाला मार्ग कच्चा था। हम दोनों भाई रात भर टोकरियाँ भर-भर कर रोड़ी और मिट्टी बिछा कर पक्का रास्ता बनाते रहे। दूसरे दिन प्रात: बाबा का संदेश आया कि ओम प्रकाश बच्चा आज बाबा के साथ बाबा के कमरे में भोजन करेगा। छोटी-सी कार-सेवा पर भगवान ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपने साथ ब्रह्माभोजन कराया, इससे बढ़कर सस्ता और सच्चा सौदा जिन्दगी में क्या हो सकता है? गुरु नानक देव जी का सच्चा सौदा मशहूर है मगर मैंने तो सच्चे सौदे का प्रत्यक्ष फल उसी समय पाया। कितनी बड़ी

खुशनसीबी है ?

बाबा मेरे साथ मित्र भाव से व्यवहार करते थे। एक बार बाबा पूछने लगे कि यज्ञ में कुछ बूढ़े भी हैं जिन के पास पर्याप्त काम नहीं रहता और दिनभर योगाभ्यास में भी इतनी रुची नहीं लेते। उनके लिए कोई काम सुझाओ ताकि वे व्यस्त रहें। मैंने सुझाव दिया कि बाबा कई आश्रमों में तो सूत कातने आदि का काम होता है। अपने यहाँ टमाटर की सॉस बनाने का कुटीर उद्योग भी सफल प्रयास सिद्ध हो सकता है। शहद का उद्योग भी काफी चल सकता है। तब बाबा ने बात को बदलते हुए एक बंगले की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यदि वह मिल जाये तो बच्चों को ठहरने में बहुत सुविधा होगी। विनाश के समय ढेर-के-ढेर बच्चे आएँगे। मैंने सवाल किया कि क्या सभी बच्चे पहुँच जाएँगे, बाबा। बाबा ने समझाया – ''सभी नहीं अपितु योगयुक्त बच्चों को विनाश लीला के अन्तिम दृश्य का आभास होने लगेगा और आवागमन के साधनों के बिगड़ने से पहले ही वे यहाँ पहुँच जाएँगे।''

दूरदर्शी साकार बाबा आवास-निवास योजना, समय से पहले इन्तजाम और वर्तमान में भी बच्चों को व्यस्त रखकर उनके समय और शक्ति का सदुपयोग कैसे हो, इन विषयों पर चिंतनशील रहते थे। बाबा सदा ही शिव बाबा द्वारा सौंपे गए महान यज्ञ की सम्भाल करने में उच्च कोटी की दक्षता, कुशलता और समर्पित भाव रखते थे। उन्होंने यज्ञ के सारे कारोबार का संचालन इतना सही, अनुशासित और समयानुकूल किया कि आज भी बिना विशेष परिवर्तन किए यह विशाल यज्ञ, बिना किसी कठिनाई के उसी पटरी पर तेज गति से दौड़ रहा है।

विभिन्न युक्तियों का प्रयोग करके बाबा प्रत्येक आत्मा के उत्थान के लिए प्रयासरत रहते थे। रहम की भावना से भरपूर थे। सभी को काम की चिता में जल मरने से बचाने की निरन्तर और अथक सेवा करना उनका स्वाभाविक निजी संस्कार था। नाउम्मीद में वे अन्तिम क्षण तक उम्मीद रखते थे। ड्रामा में कोई व्यक्ति कामाग्नि से बच पाता है या नहीं वह उसका कल्प-कल्प का भाग्य है परन्तु बाबा अन्तिम क्षण तक उसके प्रति शुभभावना बनाए रखते थे। एक बार उन्होंने मुझसे पत्र लिखवाकर एक युगल को भिजवाया ताकि वे पवित्रता की प्रेरणा पा सकें। बाबा प्रत्येक बच्चे के अनुभव को सुनने और सुनाने पर अधिक जोर देते थे। वह भाषण या लेख, जो अनुभवयुक्त हो बाबा को अतिप्रिय था।

जीवन की बहुत गहरी और गोपनीय बातों को विस्तार से बाबा को सुनाने में मजा आता था। एक बार हम युगल सहित आबू गए हुए थे। मेरी युगल ने बाबा को मेरी शिकायत करते हुए कहा कि आप का बच्चा घर में गुस्सा करता है। जब मैं विदाई ले रहा था तो धीरे-से बाबा ने मेरे कान में कहा – ''क्या बच्चे में tamper (गुस्सा) है ?'' मैंने कहा – ''विचारों में भिन्नता मुझे विवश कर देती है।'' बाबा बोले – बाबा शान्ति चाहता है और मुस्कराने लगे। बाबा की अवगुण को निकालने और उसके लिए शिक्षा सावधानी देने की यह विधि कितनी रॉयल और स्नेह भरी थी। उनके मन में मेरे प्रति कोई प्रतिक्रिया या प्रकम्पन नहीं था। हृदय की स्लेट पूरी साफ थी मगर पूरे हक से अपनी बात को कहने की शक्ति थी बाबा में।

बाबा जब दिल्ली में आए तो मैंने अपनी आर्थिक स्थिति का जायजा उनको दिया। बाबा ने एक नजर से मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। बाबा बोले कि मैं नहीं समझता कि आप अपव्यय करते होंगे। जो भी आय मिलती है उसका कुछ अंश बाबा की सेवा के लिए निकाल लिया करो। बाबा का सुझाव प्रत्येक की शक्ति अनुसार होता था। शक्ति से बाहर काम करने का सुझाव बाबा नहीं देते थे क्योंकि अपने परामर्श की अवहेलना करवाना उतना ही दोषपूर्ण

है जितना अवहेलना करना।

बाबा विनोदी स्वभाव के भी थे। बात उन दिनों की है जब आदरणीया मातेश्वरी जी ने शरीर छोड़ा था। यज्ञमाता का युवा आयु में अचानक शरीर छोड़ना, यज्ञ के सभी वत्सों के लिए वेदनाशील समाचार था। मैं मातेश्वरी जी के अन्तिम संस्कार के बाद ही पहुँचा। दूसरे दिन प्रात: मैं और बाबा मधुबन के बगीचे में खड़े थे। बाबा ने आश्रम के पीछे के द्वार की तरफ नजर उठाई तो देखा कि एक वरिष्ठ बहन आ रही है। बाबा बोले – ''देखना, यह बच्ची अब वैण करेगी अर्थात् आँखों में आँसू भर रोएगी।'' बाबा को यह कतई पसन्द नहीं था कि मृत्यु पर रोना-धोना हो। रोने वाले व्यक्ति को ज्ञान की दृष्टि से बाबा फेल समझते थे। बाबा हमेशा कहते हैं – ''अम्मा मरे तो हलवा खाओ और बीबी मरे तो भी हलवा खाओ।'' इस का अभिप्राय यही है कि हर हालत में नष्टोमोहा के पाठ को पक्का करना है। आत्माएँ तो एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर द्वारा पार्ट बजाने के लिए बंधायमान हैं। शरीर का बदलना रोका नहीं जा सकता। शिव बाबा ने प्रत्येक परिस्थिति में समान रहने का मूलमंत्र वर्षों से सिखाया है इसलिए महारथी बहनों और भाइयों की आँखों में, दैवी परिवार की आत्माओं की मृत्यु पर भी आँसू देखना बाबा को अप्रिय लगता था।

मातेश्वरी के अव्यक्त होने की घटना को भी बाबा ने इतना हल्का कर दिया कि जैसे कोई सदमे की बात ही नहीं, ड्रामानुसार एक स्वाभाविक मानने योग्य घटना है। बाबा में परिवर्तन शक्ति महान थी। गम्भीर वातावरण को सहज और सरल बना देना उनके मनोबल का परिचय देता है।

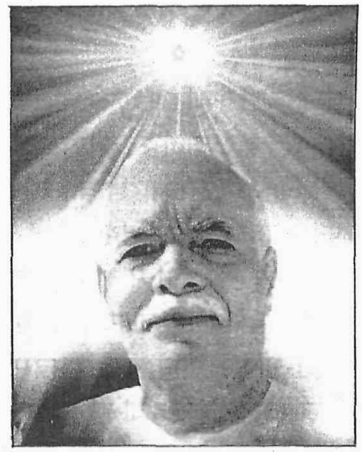
बाबा को निर्भय और साक्षीद्रष्टा के रूप में तब देखा जब वे दिल्ली में मेजर साहब की कोठी में ठहरे थे। मेजर साहब को अचानक दिल का दौरा पड़ा और उन्होंने बाबा की गोद में शरीर छोड़ा। बाबा उसको रूहानी शक्ति दे रहे थे। ऐसी रहस्यमयी घटना की छान-बीन के लिए मिलट्री-कमाण्डर ने पूछ-ताछ शुरू की। बाबा की श्रेष्ठ स्थिति ने सब की गलतफहमी को दूर कर दिया। मेजर साहब के पार्थिव शरीर को राजकीय सम्मान के साथ रवाना किया गया। बाबा जब मुरली चला रहे थे तो मेजर साहब की पत्नी रुदन करते हुए पण्डाल में प्रवेश कर गई। बाबा अत्यंत शान्त मुद्रा में, विलाप करती हुई बच्ची को दृष्टि देते रहे और वह भी शान्त हो कर मुरली सुनने लगी। बाबा ने उसे समझाया कि आप शारीरिक नाते के प्रति मोहग्रस्त स्थति होने से दु:खी हो मगर रूहानी बाप, मेजर बच्चे के तीनों कालों को और उसने जो श्रेष्ठ गति प्राप्त की है उसको भी जानता है।

बाबा ने अपने दिव्य कर्म रूपी भाषण से और श्रेष्ठ स्थिति से मेरे संस्कारों को इतना बदल दिया कि कुछ दिन पूर्व मेरे साथ घटी घटना में मुझे असीम शक्ति प्राप्त हुई। अचानक मेरा लौकिक बड़ा बेटा अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह 32 वर्षीय युवक अपनी पत्नी और एक बच्ची को छोड़ कर आगे की यात्रा की ओर प्रस्थान कर गया। जब उसके शव को अस्पताल से घर लाया गया तो एक दारुण दृश्य था। सम्बन्धी दीवार के साथ सिर पटक-पटक कर चिल्ला रहे थे। मृतक पर लेट-लेटकर रो रहे थे मगर मैंने उस दृश्य को अटल, अडोल, निर्भय और साक्षी स्थिति में रहकर देखा। श्मशान भूमि में अनेक सेवाकेन्द्रों के भाई-बहनें भी मौजूद थे। सभी के मुख पर मेरे प्रति यही शब्द थे कि एक योगी और ज्ञानी आत्मा की ऐसी ही स्थिति होनी चाहिए। कुछ लोग कह रहे थे कि अगर ज्ञान देखना हो तो ब्रह्माकुमारियों का देखो, जो जवान पुत्र की मृत्यु पर भी आँसू नहीं और भावी को सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह बाबा की अनमोल पालना ही है जो जिन्दगी के उस मोड़ पर काम आई।

▲

बाबा ने छुआई रूहानियत की ऊँचाइयाँ

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, दिल्ली



सन् 1960 में मैं पहली बार गुलजार दादी जी के साथ मधुबन बापदादा जी से मिलने गई। उस समय, जहाँ अब ओम शान्ति भवन बना है, उसके साथ में एक कोठी थी, जहाँ उच्च सरकारी अधिकारी ठहरे हुए थे। अगले दिन बाबा ने मुझे कमरे में बुलाया और झाड़ व त्रिमूर्ति के दो चित्र देकर कहा – ''जाओ बच्ची, सामने कोठी में बाबा के बच्चे ठहरे हुए हैं उन्हें शिव बाबा का ज्ञान दे कर आओ।'' मैं अकेली ही वहाँ पहुँच गई और बताया कि प्यारे बाबा ने भेजा है ज्ञान सुनाने के लिए। वे खुश हुए। मैं 10-12 दिन तक प्रतिदिन ज्ञान सुनाती रही। वे सुबह बाबा की मुरली सुनने आने लगे। जब मैं देहली लौटने लगी तो बाबा ने कहा कि किसी बच्ची को जिम्मेदारी दे जाओ, वह रोज ज्ञान सुनाने जाएगी। मैंने एक बहन का नाम लिया तो बाबा ने उसके लिए मना कर दिया और दूसरी बहन को जिम्मेदारी दी गई। मैंने जिसका नाम लिया था वह थोड़े दिनों में ज्ञान छोड़ गई। इस प्रकार, बाबा हर आत्मा का भविष्य जानते थे।

अगले वर्ष अर्थात् सन् 1961 में मैं देहली से अकेले ही मधुबन बापदादा जी से मिलने फिर गई थी। कुछ दिन रहने के बाद, एक दिन सुबह 8 बजे की बस से आबू पर्वत से आबू रोड आना था। उस समय बाबा के महावाक्य पूरे होते ही पैदल ही बस स्टैण्ड तक जाना होता था। मैंने ऐसे ही किया। बाबा की जुदाई के कारण उमड़े प्रेम-अश्रु थमने का नाम नहीं ले रहे थे। मैं चुपचाप बस में जाकर बैठ गई। बस आबू रोड की ओर चलने ही वाली थी, तभी देखा कि भूरी दादी एक हाथ में थर्मस तथा दूसरे हाथ में टोली लिए दौड़ी-दौड़ी आ गई, कहा – ''राजकुमारी, तुझे बाबा बहुत याद कर रहे हैं, कह रहे हैं कि मेरी बच्ची भूखी ही, बिना नाश्ता किए चली गई है, जाओ, उसे प्यार से खिला कर आना।'' सचमुच, मन भारी होने के कारण मैं भूखी ही आ गई थी। अब कोई पूछे, उस समय मैं रोऊँ या हँसू? रोना तो था नहीं, रूलाती तो माया है। बस, मैं प्यार में आँसू बहाती रही। वाह, मेरे प्यार के सागर बाबा, चित्तचोर बाबा, ऐसे संकल्प चलाते हुए टोली खाई, चाय पी और थर्मस वापस दे दिया। दिल वहीं प्यारे बाबा के पास छोड़कर वापस देहली आ गई।

एक दैवी भाई मेजर थे। एक बार बाबा उनकी कोठी में ठहरे थे। हम सब सुबह बसों द्वारा अपने-अपने सेवाकेन्द्रों से वहाँ बाबा की मुरली सुनने पहुँच जाते थे। एक दिन शाम को हम कुछ बहनें रात में वहाँ ठहर कर दूसरे दिन सुबह वापस आने का कार्यक्रम बनाकर गईं। सभी घर से कोई-न-कोई बहाना बनाकर गई थीं। रात को खाना खाने के बाद हम कमरे में बैठ एक-दो से बातें कर रही थीं और सुना रही थीं कि किस ने क्या-क्या बहाना लगाया है। हम सब बातों में खोई हुई थीं। अचानक क्या देखा कि एक बहन सफेद शॉल में मुख ढककर पीछे की तरफ बैठी थी। हम सभी का ध्यान उधर गया। ध्यान से मुँह खोलकर देखा तो पाया कि स्वयं हमारे प्यारे बाबा मीठी मुस्कान लिए हम सबकी बातें सुन रहे थे। हमारे सबके मुख से इकट्ठे ही आवाज 'हो' निकली। फिर तो शान्ति छा गई और बाबा हमें 'अलाऊद्दीन के चिराग' पर

छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाने लगे। इस प्रकार प्यारे बाबा ने हमारा ध्यान रूहानियत की ऊचाइयों की तरफ पुन: आकर्षित कर लिया।

सन् 1968 में मैं युगल सहित जब मधुबन गई तो बापदादा के संग ब्रह्मा-भोजन खाने का सुअवसर मिला। मनमोहिनी दीदी भी साथ थे। मेरा शर्मिला स्वभाव था। किसी के सामने खाना कम खाती थी। बाबा ने मुझे आम की गुठली चूसने को दी, मेरा हाल देखने लायक था। बाबा भी ध्यान से मुझे देख रहे थे। मैंने चालाकी से बाबा को कहा – ''बाबा, मुझे आम की गुठली अच्छी लगती है, मैं रोज चूसती हूँ।'' मैंने सोचा था कि बाबा दूसरी तरफ देखने लगेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब क्या करूँ? पर फिर विचार आया कि अरे, बाबा तो बाप है, बाप बच्चों को खाते हुए देखकर खुश होता है, तुम क्यों शरमा रही हो, ऐसे सोचते ही मैं आत्म-भाव में टिक गई और आत्मा-परमात्मा के पुत्र-पिता के रिश्ते के अनुभव में खो गई।

मैं रूमाल ले जाना भूल गई थी, ब्रह्मा-भोजन के बाद बाबा के कमरे के साथ छोटा-सा बाथरूम था, उसमें वॉश बेसिन लगा हुआ था, वहाँ हाथ धोने लगी। विचार आया कि हाथ किससे पोछूँगी, बाबा क्या कहेंगे परन्तु जैसे ही हाथ धोकर पीछे मुड़ी तो देखा कि बाबा हाथ में सफेद टॉवेल लिए मंद-मंद मुस्करा रहे थे, उन्होंने समझ लिया था कि बच्ची के मन में विचार चल रहा है कि हाथ किससे पोंछूँगी। कमाल है जानी-जाननहार बाप की! कितना प्यारा कितना मीठा शिव भोला भगवान!

एक दिन दीदी मनमोहिनी के साथ बाबा सूप पी रहे थे, मुझे भी कमरे में बुलाकर सूप पिलाया। दीदी को कहा – ''यह बच्ची अच्छा (ऊँचा) पद प्राप्त करेगी।'' बाबा ने मुझे यह वरदान दिया जिसे अब भी याद करके मेरा पुरुषार्थ तीव्र हो जाता है।

हे पुरुष पुरातन आदि देव!

– ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ

हे पुरुष पुरातन, आदि देव, हे प्रजापिता, हे मानवेन्द्र!
हे जनगण नायक महामना, हे देवसृष्टि के मुख्य केन्द्र!
ब्राह्मण कुल भूषण, सर्व शिरोमणि, ज्ञानी, योगी, तेजस्वी!
अखिल सृष्टि के प्रांगण में, तुलना विहीन मानव यशस्वी!
बैठ पुराने खण्डहर में, तुमने लिखा इतिहास नया।
दीन-हीन मानव जीवन में, भरा नित्य उल्लास नया!
हे त्यागमूर्ति तप-तेज तुम्हारा, प्रकाश-पुंज बन गया स्वयं।
भस्मीभूत हुए हैं जिसमें, काम-क्रोध-लोभ और अहं।।
हे धर्मपिता धरती को तुमने, दैवीयुग का ज्ञान दिया।
प्राय: लुप्त धर्म भारत का, उसका पुनरुत्थान किया।।
हे भागीरथ! तेरे मुख से, बही ज्ञानगंगा की धारा।
पार्थ-सा पुरुषार्थ तेरा, अथक सदा जो कभी ना हारा।।
विधि ने बैठ तुम्हारे तन से, भाग्य बनाया है जगती का।
खोला है सब राज़ सृष्टि का, मुक्ति और जीवनमुक्ति का।।
बलिहारी उस तन की, जिससे निशदिन अमृत बरसा करता।
मुरली मधुर, माधुरी मदमय, गोपी-वृन्द किलोलें करता।।
यह अमूल्य तन पिताश्री का, ब्राह्मण कुल का था स्वमान।
कल्प-वृक्ष के अन्त, आदि के, संगम का पावन वरदान।।

साकार बाबा का सुखद सान्निध्य

– ब्रह्माकुमार महेश, आबू पर्वत



प्रेम के साकारमूर्त, ज्ञान सागर, पतित-पावन, विश्वकल्याणी, गुणों के अखुट भण्डार शिव बाबा के सर्व गुणों को धारण कर साकार में प्रत्यक्ष करने वाले और सबको उनकी दिव्य अनुभूति कराने वाले, साकार देह में ही फरिश्ता स्वरूप, सबके प्रेरणा स्रोत साकार ब्रह्मा बाबा की पालना द्वारा प्राप्त अनुभवों का सार रूप में वर्णन कर रहे हैं ब्रह्माकुमार महेश भाई जो वर्तमान समय पाण्डव भवन के अकाउंट विभाग में सेवारत हैं।

– सम्पादक

मुझे परमात्मा से मिलने की इच्छा बचपन से ही थी जिसके लिए मैं यथाशक्ति भक्ति आदि करता रहता था। धीरे-धीरे यह इच्छा अधिक बलवती होती गई और सन् 1958 में जब मैं हाई स्कूल में पढ़ता था तब थियोसॉफीकल सोसाइटी के एक महात्मा बनारस से फर्रूखाबाद में हमारे कॉलेज में आये। उनके प्रवचन को सुनने से मेरी रुचि योग के प्रति बढ़ गई और यह धारणा बन गई कि योग द्वारा ही परमात्मा से मिलन हो सकता है। इस निश्चय के अनुसार मैं योग में सफलता प्राप्त करने के लिए योग्य गुरु की खोज में भिन्न-भिन्न सत्संगों में जाने लगा। और जब तक कोई ऊँचा गुरु मिले तब तक भिन्न-भिन्न योग की पुस्तकों जैसे कि श्रीमद्भगवद्गीता, पातन्जलि योग, विवेकानन्द का साहित्य, सांख्य योग, तत्व योग आदि को पढ़ कर कुछ हठयोग, आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि का अभ्यास करता रहा। धीरे-धीरे यह विचार दृढ़ हो गया कि शरीर का कोई भरोसा नहीं कि कब छूट जाये इसलिए जल्दी ही उचित आध्यात्मिक पुरुषार्थ करना चाहिए। इसलिए सन् 1962 में मिलिट्री की सेवा छोड़ कर, आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि तीर्थों पर भी गया। वहाँ पर भिन्न-भिन्न आश्रमों में भी किसी योग्य गुरु की खोज की। वहाँ अनेक महात्माओं का जीवन तो अच्छा लगा परन्तु आत्मा, किसी को भी गुरु रूप में स्वीकार नहीं कर सकी इसलिए वापस घर आकर पूर्ववत् ही अभ्यास करता रहा।

सन् 1964 में मेरे एक साथी ने फर्रूखाबाद में ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाना शुरू किया। वह कहता था कि वहाँ गीता सुनाई जाती है। उसने मुझे कुछ साहित्य भी पढ़ने के लिए दिया। उन्हीं दिनों रक्षाबन्धन के तीसरे दिन मैं अपने उस साथी के साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम पर गया। बनारस वाले गुप्ता जी की युगल कमला बहन जी आश्रम पर थीं। उन्होंने मुझे झाड़, त्रिमूर्ति, गोला वाले चित्रों को दिखाया और उनके विषय में थोड़ा बताया और योग के विषय में समझाया जो कि मेरे दिल को अति भाया और मैंने अनुभव किया कि मैं इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने योग्य स्थान पर पहुँच गया हूँ। मैं उसी दिन से नियमित क्लास करने लगा। यहीं से इस जीवन

का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। फिर तो ज्ञान के आधार पर निश्चय हो गया कि परमात्मा शिव हमारा पिता है और वह ब्रह्मा तन में अवतरित हुआ है। उनसे मिलने की इच्छा तीव्र हो गई। तीन मास के बाद बाबा दिल्ली में माथुर जी के यहाँ आये और हम वहाँ प्राणप्रिय बाबा से मिले। इस मिलन ने हमको मनवांछित प्राप्ति की अनुभूति करा दी और ऐसे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराया जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी। बाबा की आनन्दमयी गोद में जिस सुख का अनुभव किया, उससे जन्म-जन्म की प्यास शान्त हो गई और परमानन्द का रसास्वादन किया। बाबा ने पीठ पर हाथ फेरा और सिर पर हाथ रखते हुए कहा – "बच्चे, बाबा के घर आना।" दिल्ली में बाबा से मिलने के बाद मैं फर्रूखाबाद लौट तो आया परन्तु मन बाबा की गोद में ही रह गया और बाबा के घर में जाकर बाबा से मिलने की लगन लग गई। जब मैं मधुबन पहुँचा तो दया के सागर, करुणानिधि बाबा ने बड़े प्यार से मुझे रखा। मुझमें पारिवारिक स्नेह जाग्रत हो गया कि यही बाबा मेरा सच्चा बाप है, सच्चा सतगुरु है, लक्ष्य तक पहुँचाने वाला है और यही रूहानी परिवार मेरा सच्चा परिवार है। यह धारणा भी पक्की हो गई कि यही श्रेष्ठ जीवन है और मुझे यही जीवन जीना है। इस मिलन में मैंने देखा कि बाबा ने मुझ जैसे साधारण बच्चे को भी कितना प्यार और स्नेह दिया! बाबा समदर्शी और गरीब निवाज है - यह अनुभव हुआ। तुम्हीं माता-पिता, गुरु, सखा, साजन .... का जो गायन है उसका भी सत्य अनुभव हुआ जिसकी अमिट छाप जीवन पर लग गई। बाबा की जो पालना बच्चों के प्रति थी और जीवन जीने की जो कला थी, उसको देख कर एक अपरिचित व्यक्ति भी सराहे बिना नहीं रह सकता था। हर व्यक्ति उनके जीवन में अलौकिकता तथा सर्व के प्रति पितृवत् स्नेह अनुभव करता था। साकार बाबा को मैंने भृगु ऋषि के रूप में देखा, जो सहज ही किसी की जन्म-पत्री को जान जाते थे। उन्होंने पहले मिलन में ही मेरे जीवन के आदि-मध्य-अन्त को जान लिया और सारे जीवन की भविष्यवाणी कर दी, जो सत्य सिद्ध हुई और हो रही है।

इसके बाद मैं कई बार बाबा से मिलने आया। मिलन की अमूल्य घड़ियों में मैंने देखा कि बाबा के सामने आते ही आत्मिक स्थिति स्वत: ही हो जाती थी। इसका आधार था बाबा का स्वयं का लाइट हाउस-माइट हाउस स्वरूप। इसलिए ही गायन है कि परमात्मा एक सेकण्ड में मुक्ति और जीवनमुक्ति देता है। बाबा रात को भी, बच्चे जहाँ-जहाँ सोते थे वहाँ चक्कर लगाते और माँ-बाप का सच्चा प्यार देते थे, जो सहज ही किसके मन को जीत लेता था। मैंने देखा कि बाबा का हर कर्म और हर संकल्प बच्चों के कल्याण प्रति था और शिक्षा देने वाला था। साकार बाबा को मैंने चलते-फिरते फरिश्ते के रूप में देखा। उनका संकल्प-प्रवाह इतना शक्तिशाली था कि सान्निध्य में आने वाला व्यक्ति स्वत: ही अशरीरी हो जाता था। बाबा से जब-जब मिला सुर-दुर्लभ परमानन्द का अनुभव किया। जब-जब मैं बाबा की गोद में गया तो मैं अपने को भूल गया, फिर बाबा ने अपने हाथ से पीठ थपथपाई और मेरी सुधबुध वापस आई। शिव बाबा तो है ही गरीब निवाज क्योंकि उनके लिए गरीब-अमीर की बात ही नहीं परन्तु साकार बाबा को भी मैंने गरीब निवाज के रूप में ही देखा। उनके मिलन और पालना को याद करके एक गीत के शब्द याद आ जाते हैं - हम तो कहाँ तेरे काबिल, तेरा करम है तूने दिया दिल, तेरे हो गये हम।

मेरे जीवन में न बाबा के प्रति और न ही ज्ञान के किसी रहस्य के प्रति कभी कोई प्रश्न उठा और न ही है। इसलिए मुझे बाबा से पूछने का भी कुछ नहीं रहा। जब भी आये बाबा की गोद ली, यज्ञ की सेवा की और ज्ञान-योग में अपना समय लगाया। ज्ञान के सभी रहस्यों का अनुभव बाबा स्वयं कराता रहा है और कराता रहता है। सब दादियों, भाई-बहनों के प्रति

श्रद्धा-भावना है परन्तु बाबा की मुरली ही मेरे जीवन का मार्ग-दर्शक है, उससे अनेक गुह्य रहस्यों का अनुभव स्वत: बाबा कराता है।

मैंने साकार बाबा के जीवन में रमणीकता और गम्भीरता का, लव और लॉ का अद्वितीय सन्तुलन देखा। कई बार देखा कि बाबा बच्चों की इच्छा को देख कर, उनको सन्तुष्ट करने के लिए कोई कार्य कर भी देते थे परन्तु साथ ही उनके हित की शिक्षा भी अवश्य देते थे। जैसे कई बार बच्चे बाबा के साथ फोटो खिंचवाने का आग्रह करते थे तो बाबा फोटो खिंचवा तो लेते थे परन्तु साथ ही शिक्षा भी देते थे कि बच्चे शिव बाबा का फोटो तो ले नहीं सकोगे, याद तो शिव बाबा को ही करना है, इस तन को याद करने से फायदा नहीं है। कई बार पार्टी के कई भाई-बहनें बाबा को क्लास में गीत या कविता सुनाना चाहते थे, बाबा गीत-कविता सुनता भी था पर साथ-साथ शिक्षा भी अवश्य देता था कि बच्चे, इस ज्ञान में गीत-कविताओं की आवश्यकता नहीं है, ये तो भक्तिमार्ग की बातें हैं। ज्ञान-मार्ग में तो शान्ति में रह कर बाबा को याद करना है। साकार बाबा का जीवन निराकार शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा की आत्मा के कर्त्तव्यों का एक ही साकार दर्पण था।

अठारह जनवरी 1969 के दिन मैं कानपुर में योग में बैठा था तभी गंगे दादी जी ने समाचार सुनाया कि ब्रह्मा बाबा ने साकार देह का त्याग किया है, मैं मधुबन जा रही हूँ, कोई मेरे साथ चलना चाहे तो चल सकता है। मैंने दादी जी को कहा कि मैं चलूँगा क्योंकि साकार बाबा ही तो मेरे जीवन का आधार थे। मधुबन पहुँचने पर सारे दृश्य देखते हुए भी मुझे कोई आँसू नहीं आये और न ही कोई प्रश्न उठा। मैं मूक द्रष्टा बना रहा और जो भी कार्य चला, उसमें हाथ बँटाता रहा। आज मैं उस दिन को याद करता हूँ तो मेरे दिल को बड़ी शान्ति मिलती है कि मैंने जिस बाप की गोद ली, उसकी साकार देह के अन्तिम संस्कार में सम्मिलित होकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया। साकार बाबा के सान्निध्य के थोड़े से सुखद क्षणों का वर्णन ही मैंने किया है। साकार मिलन का अनुभव तो गूँगे के गुड़ के समान है, जो खाये वही जाने। साकार बाप का सुखद वरद् हाथ, जो उन्होंने सिर पर रखा, वह आज भी सिर पर है और सदा रहेगा। अव्यक्त रूप में भी उन्होंने साकार के समान ही अनुभव कराया है। वे ही इस जीवन के आधार हैं।

❑❑

पुरुषोत्तम संगमयुग – भूगोल तथा........पृष्ठ 13 का शेष

पूछी। प्रोफेसर ने वैज्ञानिक तरीके से जाँच करके कहा कि यह लगभग 6000 वर्ष पुराना है। तब भाई ने कहा कि जी नहीं, यह सिर्फ 3000 वर्ष और 1 मास पुराना है, यह वही पत्थर है और फिर सारी घटना का वर्णन किया। इस प्रकार, भौगोलिक बातों का प्रभाव न सिर्फ मनुष्य के ऊपर परन्तु प्रकृति के पाँच तत्वों पर भी पड़ता है। वैज्ञानिक सिद्धांतों में भी भूगोल का सही ज्ञान ज़रूरी है।

इससे सिद्ध होता है कि इतिहास तथा भूगोल की वास्तविकता को जानना कितना महत्त्वपूर्ण है। इस वास्तविकता का ज्ञान एक परमपिता परमात्मा ही दे सकते हैं , अन्य कोई नहीं। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग में क्रमवार होने वाले परिवर्तनों का सत्य ज्ञान परमात्मा ही देते हैं। विस्तार से चर्चा करें तो इस विषय पर और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु हमारा लक्ष्य है, पूर्व भूमिका के रूप में सृष्टि के भूगोल, इतिहास और संस्कृति का सिंहावलोकन करना जिससे कि संगमयुग यथार्थ स्वरूप में समझा जा सके। ▲▲

प्रजापिता ब्रह्मा

– ब्रह्माकुमारी नूतन, मालवण



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अब एक विश्वव्यापी संस्था बन गया है। जो लोग इस विद्यालय के सभी सिद्धान्तों का पालन करते हैं वे ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं और वे सभी स्वयं को ईश्वर के अविनाशी बच्चे मानते हैं। इनके ज्ञानमय साकारी जीवन का निर्माण प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हुआ है। निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने जिस अनुभवी वृद्ध शरीर को अपना रथ चुना उसी का नाम रखा प्रजापिता ब्रह्मा। ईश्वर ने उसी को अपना रथ क्यों चुना ? उसमें ऐसे क्या गुण थे जो वह 'प्रजापिता ब्रह्मा' के पद के लायक बना ? आइए, आज इसी बात पर विचार सागर मंथन करें –

भक्तिमार्ग में प्रजापिता ब्रह्मा का चित्र हम सभी ने देखा है। उस चित्र में दिखाये गये प्रतीकों द्वारा हम ब्रह्मा बाबा के विभिन्न गुणों को जान सकते हैं। 'ब्रह्मा' शब्द की व्युत्पत्ति बृह धातु से हुई है जिसका अर्थ है मुख के शब्द द्वारा निर्माण करना और उसका प्रसार करना। वेदों और पुराणों में ब्रह्मा को विश्वकर्मा, प्रजापति, बृहस्पति, ब्रह्मा, हिरण्यगर्भ आदि नामों से जाना जाता है। ये सभी नाम संकेत देते हैं कि ब्रह्मा महान शिक्षक रहे होंगे और उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान देकर लोगों का निर्माण किया होगा। इसी कारण उन्हें प्रजापिता कहा जाता है। उन्होंने उपकार का सर्वोच्च कार्य किया जिसके कारण उन्हें ब्रह्मा (महान पुरुष) कहा जाता है।

पारम्परिक रूप से ब्रह्मा का चित्रण

1. **चतुर्मुख** – ब्रह्मा को चतुर्मुख दर्शाया जाता है। ये चार मुख वेदों के प्रतीक हैं। 'वेद' का अर्थ है दिव्य ज्ञान। ब्रह्मा द्वारा दिव्य ज्ञान के चार विषय सिखाये गए – 1. आध्यात्मिक सिद्धांत, 2. आध्यात्मिक योग या आत्मानुभूति, ईश्वरानुभूति तथा आत्मशुद्धि का विज्ञान, कला तथा व्यवहार, 3. दिव्यगुण तथा शुद्धता, 4. सेवा अर्थात् कर्त्तव्य, परोपकार, दान तथा लोगों के कल्याण के प्रति समर्पण। यह चतुर्विध ज्ञान ही लोगों को सच्चा सुख, शान्ति, समृद्धि पाने योग्य बनाता है। यह ज्ञान चारों दिशाओं में अर्थात् पूरे विश्व में फैल गया इसलिए इन्हें 'जगत्गुरु' कहा जाता है।

2. **दाढ़ी** – ब्रह्मा को दाढ़ी वाले वृद्ध मानव के रूप में दिखाया जाता है। चित्र यही दर्शाते हैं कि वे देवता नहीं थे, क्योंकि देवताओं को न तो दाढ़ी सहित दर्शाया जाता है और न ही वृद्ध। दाढ़ी प्रतीक है परिपक्वता और अनुभव की तथा पितृतुल्य भाव की। अत: ब्रह्मा केवल एक साधारण मनुष्य ही नहीं थे बल्कि सृष्टि के साकार कर्त्ता तथा पिता थे।

3. **चार हाथ** – ब्रह्मा के एक हाथ में ग्रंथ दर्शाया गया है जो ज्ञान का प्रतीक है। दूसरे हाथ में जपमाला है जो कि परमसत्ता की शक्तियों के निरन्तर चिन्तन और ध्यान की प्रतीक है। वे केवल ज्ञानी नहीं बल्कि आध्यात्मिक अनुशासन से युक्त थे। एक सौ आठ मणकों की माला दर्शाती है कि बुराइयों पर जीत पाने वाले लाखों मुखवंशावली बच्चों का नेतृत्व उन्होंने 108 ऐसी महान आत्माओं से करवाया जिन्होंने बुराइयों को सबसे पहले समूल नष्ट करके स्वयं को विजयमाला में पिरो लिया। तीसरे हाथ में कमण्डल या जल-पात्र दर्शाया जाता है जो कि पवित्र जल या अमृत का प्रतीक है। ब्रह्मा को दिव्यज्ञान

प्राप्त हो गया था। दूसरे लोगों को इसी ज्ञानामृत का दान उन्होंने किया। आत्माओं की बुझी हुई ज्योति जलाई। भारत में ज्ञान की तुलना जल से की जाती है। ज्ञान की प्यासी आत्मा के लिए ज्ञान उतना ही अमूल्य है जितना कि प्यास से तड़पते मनुष्य के लिए जल। चौथा हाथ अभय दान की मुद्रा में है जो प्रकट करता है कि वे स्वयं निर्भीक थे। उन्होंने आध्यात्मिक सिद्धि की अवस्था प्राप्त कर ली थी और दूसरों को वे वरदान दे सकते थे।

4. स्वर्णिम मुख मण्डल – ब्रह्मा का स्वर्णिम मुख मण्डल इस बात का प्रतीक है कि उनकी मुखवंशावली रचना उसमें स्वर्णयुग के आगमन को भी निहारती थी और ईश्वर के दिव्य प्रकाश की भी अनुभूति करती थी।

अन्य प्रतीक – ब्रह्मा को श्वेतवस्त्र-धारी दर्शाया जाता है, यह शुद्धता का प्रतीक है। मुकुट, राजसी व्यवहार, भव्यता और महिमा का प्रतीक है, वे राजर्षि या राजयोगी थे।

श्वेत या लाल कमल का आसन

कमल अनासक्ति का प्रतीक है और श्वेत कमल शुद्धता का तथा लाल कमल प्रेम तथा अतीन्द्रिय सुख का प्रतीक है। ब्रह्मा ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य आदि सिद्धांतों में स्थिर थे और उनमें परमपिता के प्रति अगाध प्रेम था। लाल रंग ऊर्जा और सक्रियता का प्रतीक है। ब्रह्मा ने विश्व की रचना का कार्य किया, जो कि ऊर्जा और सक्रियता बिना नहीं किया जा सकता था। विशिष्ट मुद्रा – ब्रह्मा को दाहिना पैर कमल पर टिका कर तथा बायाँ पैर मोड़े हुए और आसन पर रख कर बैठे हुए दिखाया जाता है। यह मुद्रा दर्शाती है कि विश्व के साथ उनका सक्रिय और विवेकपूर्ण सम्पर्क था। वे भावनाओं से विचलित या आलस्यग्रस्त नहीं होते थे। यज्ञोपवीत – आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है। हंस – हंस सही निर्णय क्षमता का प्रतीक है। हंस का श्वेत वर्ण शुद्धता का प्रतीक है। भारतीय परम्परा में शुद्धता तथा आत्मचेतना की उच्च अवस्था प्राप्त करने वाले साधु को 'परमहंस' कहा जाता है। ब्रह्मा को सात हंसों के रथ पर आरूढ़ दिखाते हैं। वे सात हंस दर्शाते हैं कि अन्य सात राजयोगियों से ब्रह्मा की स्थिति उच्च है। खुले हुए नेत्र – पूर्ण व्यापक जागृति के और ज्ञान-चक्षु खुलने के प्रतीक हैं। ईश्वर का ध्यान करने के लिए आँखें बन्द करने की जरूरत नहीं, केवल आन्तरिक रूप से सचेत होना पड़ता है। खुले हुए नेत्र चिंतन की परिपक्वता तथा स्वाभाविक अवस्था के भी द्योतक हैं।

विष्णु की नाभि से उत्पत्ति

नाभि का एक अर्थ-केन्द्र या मध्य बिन्दु भी होता है। प्रजापिता ब्रह्मा ही अपने पहले जन्म में श्री नारायण के रूप में थे। श्री लक्ष्मी तथा श्री नारायण का संयुक्त रूप ही श्री विष्णु है। वे विष्णु रूप में पालना तथा ब्रह्मा रूप में स्थापना करते हैं। ब्रह्मा पद की प्राप्ति उन्हें तभी होती है जब परमात्मा शिव उन्हें विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार कराके 'तत्त्वम्' का वरदान दे देते हैं। इस वरदान का अर्थ है कि तुम ही भविष्य में विष्णु बनने वाले हो। इस रहस्य को जान लेने पर ही वे ब्रह्मा का कर्त्तव्य करने को उद्यत होते हैं। इसलिए कहावत बन गई कि विष्णु की नाभि से ब्रह्मा निकला। इसका स्थूल अर्थ तो बहुत विचित्र हो जायेगा परन्तु आध्यात्मिक अर्थ बड़ा सीधा और सुग्राह्य है। हमारे समाज और साहित्य में किसी भी बात को प्रतीकों के आधार पर प्रस्तुत करने की सुन्दर प्रथा प्रचलित है। इन प्रतीकों के अर्थ को जान कर ही हम आध्यात्मिक उन्नयन कर सकते हैं और वर्तमान समय में चल रहे ईश्वरीय कार्य को भी पहचान सकते हैं। वर्तमान समय नवसृष्टि की स्थापना का कार्य भगवान कर रहे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को उन्होंने सन् 1937 में अपना माध्यम बनाया और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। इस प्रकार, पिछले 69 वर्षों से उनका नवसृष्टि रचना का कार्य जारी है।

▲▲

जिसकी तलाश थी, वह मिल गया

साकार ब्रह्मा बाबा से पालना का सौभाग्य प्राप्त करने वाले ब्रह्माकुमार रामनाथ जी का दिल्ली की ईश्वरीय सेवाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आप भ्राता सुन्दरलाल जी व बहन शुक्ला जी के साथ अनेक सेवाकेन्द्रों की स्थापना एवं मीडिया प्रभाग की सेवा में सहयोगी रहे हैं। सरलता व सादगी के प्रतीक, स्वभाव से विनम्र व उदारचित्त, ब्रह्माकुमार रामनाथ जी सच्चे कर्मयोगी व कुशल वक्ता हैं। आप सन् तमभत से ईश्वरीय सेवा व मूल्य-शिक्षा हेतु पूर्णतः समर्पित हैं। वर्तमान समय आप विकासपुरी व नजफगढ़ क्षेत्र की ग्रामीण सेवाओं में संलग्न रहते हैं, यातायात संभाग (Transport Wing) के दिल्ली क्षेत्र के संयोजक (co-ordinator) हैं तथा विकासपुरी सेवाकेन्द्र पर सेवारत हैं। – सम्पादक

मेरा जन्म वैष्णव परिवार में सन् 1937 में ज़िला मुलतान के एक गाँव में हुआ, जो वर्तमान समय पश्चिमी पाकिस्तान में है। जमींदारी और व्यापार से जुड़े परिवार में मेरे बाल्यकाल के 10 वर्ष आनन्द के साथ गुजरे। फिर अचानक जीवन में एक नया मोड़ आया जो कभी ख्वाबों और ख्यालों में भी नहीं था। सितम्बर, 1947 की एक प्रात: 10 बजे हम बच्चे घर के बाहर कबड्डी खेल रहे थे। नवाब का एक संदेश मिला कि 12 बजे से पूर्व घर छोड़ कर कहीं भी सुरक्षित स्थान पर चले जाओ नहीं तो जान-माल की हानि होगी। हमें भारत स्थानान्तरित होने के लिए सिर्फ दो घण्टे का समय मिला था। तीन कपड़ों में हम बेघर हो गए। सेकण्ड में राव से रंक की स्थिति का अनुभव बाल्यकाल में ही कर लिया। भारत-पाकिस्तान के बँटवारे के समय हुए इस खून-ए-नाहक खेल में न कोई रहने का प्रबन्ध था, न खाने की व्यवस्था थी। कुछ समय बाद हमारा परिवार भारत में कुरुक्षेत्र में रहने लगा।

विभाजन के समय की विपरीत परिस्थितियों में मेरा किशोर व युवा जीवन बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा लेकिन परिस्थितियों ने सिखाया भी बहुत कुछ। सहन करने की, सामना करने की, सहयोग देने की, इकट्ठे कार्य करने की शक्ति तथा नम्रता और सर्व के प्रति आदर भाव आदि गुण जीवन में स्वत: उभर आए। कष्ट के ये अनेक वर्ष जैसे कि पल में व्यतीत हो गए और एक दिन अचानक जीवन की तपती दोपहरी पर चन्दन जैसी शीतल बौछार हो गई। मुझे भगवान के घर से एक फोन आया। कितनी बड़ी बात है! आज के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति के घर से किसी को फोन आ जाए तो वह कितना गर्वित होता है और मुझे भगवान के घर से फोन आया! बात 30 अगस्त, सन् 1966 की रात्रि के लगभग 9 बजे की है, मैं जम्मू में आर्मी टेलीफोन एक्सचेन्ज (Army Telephone Exchange) में निरीक्षक की सेवा पर था। गाँधी नगर स्थित ब्रह्माकुमारी आश्रम की ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन ने फोन किया और अपने स्थान का परिचय देते हुए मुझे कहा कि भगवान आए हुए हैं, उनकी मुरली चलती है, आप को भी ईश्वरीय निमन्त्रण है, भगवान के घर में मुरली सुनने का। 'भगवान की मुरली?', मेरे आश्चर्य का पारावार न था। मैंने तुरन्त पूछा –"क्या आप सत्य बोल रही हैं?" उन्होंने कहा – "मैं सत्य बोल रही हूँ।" मैंने विश्वास करने के लिए 2-3 बार पूछा। हर बार उन्होंने दृढ़ता के साथ 'हाँ' में उत्तर दिया। मैंने कह दिया कि मैं प्रात: जरूर आऊँगा। अगले दिन रक्षाबन्धन था, मैं इस धुन में प्रात: 8 बजे आश्रम जा पहुँचा कि भगवान की बजती हुई मुरली सुनने

को मिलेगी।

क्लास रूम में ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन, भाई-बहनों को राखी बाँध रही थीं। मेरा परिचय पाकर बड़े स्नेह से उन्होंने मुझे कहा कि पहले मैं अपने इस भाई को राखी बाँधूँगी परन्तु मैंने आग्रह किया कि पहले मुझे भगवान की मुरली बजती हुई सुनवाओ क्योंकि मैं अपनी बहन द्वारा भेजी गई राखी कमरे में छोड़ कर पहले भगवान की मुरली सुनने यहाँ आया हूँ। ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन ने मेरी बात सुनी परन्तु राखी बँधवाने के लिए दुबारा कहा। इस पर मैंने राखी बँधवाई परन्तु अपना आग्रह जारी रखा कि भगवान की मुरली मुझे सुनवाओ।

कुछ मिनट के बाद बहन जी मुझे स्वागत-कक्ष में ले गई। वहाँ बिठा कर उन्होंने मुझे सृष्टि-चक्र के चित्र द्वारा श्री कृष्ण के 84 जन्मों की कहानी सुनानी आरम्भ कर दी और कहा कि भगवान की मुरली को समझने से पहले यह सब जानना ज़रूरी है। मुझे मुरली सुननी थी इसलिए मैं धैर्य से उनकी बातें सुनने लगा। चारों युगों का ज्ञान सुनाते-सुनाते जब वे कलियुग का वर्णन करने लगीं तो मेरे अन्तर्चक्षु खुल गए और मन बोल उठा कि यह कहानी मेरी भी, ऐसी ही, इनके साथ है। मैंने तुरन्त बहन जी से पूछा कि यह सारा ज्ञान आपको कहाँ से पता चला? इस ज्ञान का स्रोत क्या है, कहाँ है? मैं उनसे मिलने के लिए उत्सुक हो उठा हूँ। तब बहन जी ने मुझे परमात्मा पिता का सत्य परिचय दिया। अगले पल ही मुझे निश्चय हो गया कि मुझे जिसकी तलाश थी, वह मुझे मिल गया। यह ईश्वरीय अनुभव इतना गहन था कि सात दिन का कोर्स किए बिना ही ईश्वरीय महावाक्य समझ में आने लगे। सन्देशी द्वारा प्यारे बाबा की प्रेरणा पाकर मैंने आश्रम में ही रह कर 10 दिन तक योग-भट्ठी (गहन योगाभ्यास) की। स्थूल-सूक्ष्म दोनों प्रकार की ईश्वरीय पालना से जीवन में बेहद अलौकिक परिवर्तन आया। मैं अविवाहित था, मैंने कुमार रह कर, पवित्र जीवन व्यतीत करते हुए आजीवन ईश्वरीय सेवा करने का दृढ़ संकल्प ले लिया। ज्ञान प्राप्त करने के 3 मास पश्चात् मैं लौकिक परिवार से मिलने गया। मुझमें परिवर्तन देख वे कहने लगे कि यह अब ईश्वर का हो गया है। आत्मिक दृष्टि-वृत्ति ने दैहिक बन्धनों से बहुत जल्दी मुझे मुक्त कर दिया।

मधुबन में मुरलीधर से पहली मुलाकात

छुट्टियों के दिनों में जब मैं लौकिक परिवार में था तो जम्मू से निमित्त बहन ने मुझे पत्र द्वारा बाबा से मधुबन में मिलने का निर्देश दिया जिसके अनुसार निश्चित तिथि पर मैं मधुबन पहुँच गया। किसी कारण से जम्मू की बहनें व भाई मधुबन नहीं पहुँच सके थे। द्वार पर पहरे वाले भाई ने मुझसे निमित्त बहन की चिट्ठी माँगी। मेरे द्वारा 'नहीं' का उत्तर दिए जाने पर वह अन्दर सूचना देने गया। इसके बाद बड़ी दीदी मनमोहिनी जी के साथ बातचीत हुई। उन्होंने मुझसे कहा कि आपकी बहन का कोई पत्र व सूचना हमारे पास नहीं है। मैंने बड़े निश्चय से उत्तर दिया कि मैं स्वयं ही चिट्ठी हूँ। दिसम्बर मास की कड़कती सर्दी के मौसम में भी मैं पूर्ण निश्चिन्त था, मन में कोई हलचल नहीं थी, मेरी इस निश्चिन्तता ने ही मुझे स्वीकृति दिला दी। मैं अन्दर गया तो विचित्र अनुभव होने लगे। ऐसे लगा जैसे कोई बहुत बड़ा चुम्बक है जो अपनी तरफ खींच रहा है।

प्रिय बाबा से मिलने का कार्यक्रम उन दिनों नहीं चल रहा था। कहीं से भी कोई पार्टी नहीं आई हुई थी। मधुबन में केवल कुछ सेवाधारी बहन-भाई ही थे। क्लास भी हिस्ट्री हॉल (History Hall) में हुआ करती थी। प्यारे बाबा प्रात: लगभग 6:50 बजे क्लास में प्रवेश हुए। मैं भी क्लास में उपस्थित था। मेरा ध्यान

एकदम बाबा पर गया। बाबा की चमकती मस्तक मणि, पवित्र और स्नेह भरे नयन, सर्व प्राप्ति सम्पन्न खुशनुमा चेहरा, विश्व की सर्व मनुष्यात्माओं को दीर्घ बाँहों में समाने में सक्षम सुडौल और लम्बा शरीर अतिप्रिय लग रहा था। शारीरिक रूप से, पूर्व में कोई परिचय न होने पर भी मुझे बाबा से दिल की अति समीपता का अनुभव हो रहा था। उस दिन के महावाक्यों में बाबा ने कहा कि जब आत्मा को बाप पर निश्चय हो जाता है तो वह बाप से मिले बिना रह नहीं सकती। मुझे ऐसे लगा कि बाबा मुझे अपने सामने रख कर ही यह कह रहे हैं। मैंने देखा कि मीठी-मीठी शिक्षाएँ और याद-प्यार देकर द्वार से निकलते समय बाबा बच्चों की ओर पीठ नहीं करते थे, मुख बच्चों की तरफ रखे-रखे ही बाहर जाते थे।

इसके बाद जब मैं व्यक्तिगत रूप से बाबा से मिला तो मन बाबा के प्रति अपने-पन से सराबोर था, कुछ भी नया नहीं लग रहा था। महसूस हो रहा था कि मैं अपने पिता के पास हूँ। मैं उस समय 3-4 मास का नया-नया बच्चा था। बाबा ने मुझे पहले-पहले स्मृति दिलाई – "आपने जितनी भक्ति की है, उसका फल दैवी राजाई है।" मैंने मुस्कराते हुए जवाब दिया – "अब तो आप मिल गए हो बाबा, और क्या चाहिए।" बाबा भी मुस्कराते हुए बोले – "बच्चे, आप तो राम के भी नाथ हो।" धन की आय और खर्च के बारे में भी बाबा ने पूछा। मैंने उत्तर में बाबा को सब बताया कि मैं कितना अपने लिए और शेष यज्ञ के लिए खर्च करता हूँ, तो तुरन्त प्यारे बाबा ने मुझे खर्च करने की विधि इस प्रकार बताई – 1. एक हिस्सा अपने लिए, 2. एक हिस्सा यज्ञ के लिए, 3. एक हिस्सा लौकिक माता-पिता प्रति, 4. एक हिस्सा बचत के रूप में सुरक्षित रखना।

मैंने बाबा को वरद हस्तों से टोली खिलाते, संग खेलते, अमृत पिलाते, संग झूला झुलाते, बच्चों की प्यार से पालना करते, छोटी-से-छोटी बात बच्चों को प्यार से समझाते और अन्त में गो सून और कम सून (go soon and come soon) की टोली देकर, वट वृक्ष के नीचे आकर अपने कमल-हस्तों से सफेद रूमाल हिला कर प्यार से विदाई देते देखा। बाबा जानी-जाननहार है, इस बात का मुझे तब अनुभव हुआ जब बाबा ने मुझसे पूछा कि ये वस्त्र (पहने हुए) कहाँ से मिले हैं, क्या बाबा के यज्ञ से? सच में, जब मैं ईश्वरीय ज्ञान में आया था तो बाबा के यज्ञ से अर्थात् जम्मू आश्रम से वे वस्त्र मुझे ईश्वरीय सौगात के रूप में प्राप्त हुए थे। परन्तु मधुबन में रहते बाबा को कैसे पता चला? अवश्य ही प्यारे बाबा जानी-जाननहार हैं। मुझे अनुभव हुआ कि बाबा बेहद का बाबा है, सारी सृष्टि की आत्माओं का परमपिता है, केवल एक मेरा ही नहीं। प्यारे बाबा के हृदय की विशालता, उदारता, त्रिकालदर्शिता तथा दूरदर्शिता का अनुभव उस समय भी मैंने किया जब बाबा ने मुझे अपने हाथों से सौगात दी। मेरे लौकिक माता-पिता के लिए भी यज्ञ की टोली, एक बाल्टी और एक धोती भी सौगात में दी, जिसे पाकर माताजी-पिताजी बहुत प्रसन्न हुए। प्यारे बाबा का यही प्यार उन्हें ईश्वरीय बन्धन में बाँधने का मुख्य आधार बना। मेरे कर्म-बन्धन भी ढीले हो गए। मेरी छोटी बहन सतीश भी बाद में बापदादा से मिली। अन्य भाई-बहनें तथा लगभग 15-20 अन्य पारिवारिक सदस्य भी आज ईश्वरीय पालना प्राप्त कर रहे हैं।

समय पर बापदादा की छत्रछाया का अनुभव

कुछ इन्सान ऐसे होते हैं जो आवश्यकता के समय पर काम आएँ तो उनके अहसान हम नहीं भूलते परन्तु बाबा तो हर पल काम आते हैं इसलिए उनके अहसान कभी भी नहीं भूलाए जा सकते, ना ही हम उनका

कर्ज चुका सकते हैं। जीवन में अनेक ऐसे अवसर आए जब बाबा की अपार मदद मिली। कुछ वर्ष पूर्व की बात है, वकील लालचन्द जी (जो यज्ञ के भी वकील थे तथा बाबा के प्रिय बच्चे थे) ने अपने घर देहली में फ्रैन्ड्स कॉलोनी (Friends Colony) में भ्राता निर्वैर जी, 10-12 विदेशी बहन-भाइयों और देहली के भी 4-5 बहन-भाइयों को स्नेह-मिलन कार्यक्रम में बुलाया। ड्रामा अनुसार मुझे भी निमन्त्रण मिला था। जाने से पूर्व जब मैं बाबा के कमरे में आज्ञा लेने गया तो मुझे आभास हुआ कि बाहर जाने में जीवन को खतरा है। मैंने कार्यक्रम स्थगित कर दिया परन्तु वकील साहब के स्नेह भरे आग्रह को याद कर मैं एक घण्टे बाद फिर बाबा के कमरे में गया परन्तु फिर भी मुझे ऐसा आभास हुआ कि जीवन को खतरा है। मन में प्रश्न उठा कि इतने प्यार भरे निमन्त्रण को कैसे टालूँ? मैंने निर्णय किया कि मैं आज साक्षी होकर देखूँगा। मैं बहन जी को यह कह कर गया कि अगर मैं शाम को 5 बजे तक न पहुँचूँ तो वकील लालचन्द जी के घर पर फोन करके समाचार ले लेना।

दोपहर लगभग 12 बजे अपने दुपहिया वाहन पर, फ्रैन्ड्स कॉलोनी की ओर जब मैं मुड़ने लगा तो पीछे से आ रहे ट्रक ने मुझे टक्कर मारी। ट्रक के अगले बाएँ पहिए के साथ मेरा स्कूटर था तथा मेरी पीठ पर ट्रक का अगला दायाँ पहिया था। चालक गाड़ी छोड़ कर भाग गया। पीछे से आने वाले लोगों ने मुझे उस पहिए के नीचे से निकाला और कुछ लोगों ने भागते हुए चालक को पकड़ा और पीटते-पीटते मेरे पास ले आए। चालक भी 'बचाओ-बचाओ' कह कर चिल्ला रहा था। मेरे शरीर में, मस्तक से होकर एक ऐसी तरंग (current) ने प्रवेश किया जो सारे शरीर से होती हुई नीचे पैरों तक जाकर फिर वापस सिर तक आई और सारा शरीर फड़फड़ाया। मैं एकदम ठीक हो गया जैसे कि मुझे कुछ हुआ ही नहीं था। मेरा स्कूटर भी उस ट्रक के टायर के साथ लगा बिल्कुल सुरक्षित था। चालक को मैंने यह कह कर छुड़वा दिया कि मेरा किसी जन्म का हिसाब-किताब था वह पूरा हुआ। इसी दौरान लोगों ने पुलिस को भी बुला लिया तथा मैंने लिख कर दे दिया कि चालक को छोड़ दिया जाए।

उस समय मुझे यह अनुभूति बाबा ने कराई कि जो बच्चे बाप के कार्य में समय पर काम आते हैं, बाबा भी समय पर उनके काम आने के लिए बन्धायमान हैं। मेरे वस्त्र तो बिल्कुल फट चुके थे, मैं सोचने लगा कि अब मुझे वापिस आश्रम लौट जाना चाहिए। ऐसी हालत में पार्टी में जाने से रंग में भंग पड़ जायेगा। तभी पीछे से बहन चक्रधारी जी, भाई आर.एल. गुप्ता जी आए, मुझे देख कर रुके और कहा कि वस्त्रों का ख्याल न करो, यह प्रबन्ध वकील साहब के घर पर हो जायेगा। मैं वहाँ गया तथा सारा कार्यक्रम कुशलता पूर्वक सम्पन्न होने के बाद ठीक 5 बजे विकासपुरी आश्रम लौट आया। मुझे ऐसे लगा कि जैसे मेरा नया जन्म हुआ हो। दिल से निकला, 'धन्यवाद बाबा, धन्यवाद बाबा।' मैंने ड्रामा का रहस्य भरा दृश्य साक्षी होकर देखा कि कैसे यह सारी घटना, पुराना हिसाब समाप्त करवा कर नया जीवन देने के निमित्त बनी। दिल बार-बार कहता है – "शुक्रिया बाबा! तेरा शुक्रिया, इस ब्रह्माण परिवार का भी शुक्रिया" क्योंकि ईश्वरीय परिवार की दुआएँ भी ऐसे अवसर पर बहुत साथ देती हैं। ▲▲

दुआओं का खाता जमा करने का साधन है – सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना।

साहित्य और चित्रों द्वारा......पृष्ठ...2 का शेष

वह समझ जाते कि सचमुच इन्हें इस काम की जल्दी है और बाद में फुर्सत में कभी संस्था की प्रशंसा करते हुए कहते – "आपके बाबा सचमुच कमाल हैं, जो सारा ही काम वैरी अर्जेन्ट (very urgent) बताते हैं। बाबा ने आप लोगों की लगन इतनी तीव्र कर दी है कि इस संस्था के कार्यकर्त्ता न अपने भोजन का ख़्याल करते हैं न आराम का और हम लोग उन्हें कुछ खाने के लिए पेश करते हैं तो वे कहते हैं कि हमें बाहर का नहीं खाना। आप सब लोगों की लगन देख कर और इसे शिव बाबा का ही कार्य समझ कर हम और काम छोड़ कर भी पहले इसे करते हैं।"

बाबा केवल छपाई के लिए ही जल्दी नहीं करते थे बल्कि उसे जल्दी भिजवाने के लिए भी कोई कोर-कसर न छोड़ते। हम हर बार जब स्टेशन पर पार्सल बुक करवाते, तब अपने ही सामने पहली गाड़ी में चढ़वाने पड़ते। बहुत बार स्टेशन सुपरिन्टेन्डेन्ट से पार्सल के फ़ार्म पर 'तुरन्त भेजो' (send at once) लिखवाना पड़ता और कितने ही पार्सल तो स्टेशन पर पहली गाड़ी से फर्स्ट क्लास या एयर-कंडीशन्ड कोच में जाने वाले यात्रियों द्वारा भेजने पड़ते। ऐसा भी होता कि किसी भाई को सब पार्सल देकर एक गाड़ी में बिठा देते और रास्ते में आने वाले सब सेवाकेन्द्रों पर टेलीफोन खड़का दिये जाते कि वे अमुक गाड़ी से अपना पार्सल ले लें। रात-दिन सेवा का कार्य चालू था।

उन दिनों रिवाज यह था कि किसी के घर में तब तार आती थी जब उनके किसी निकट सम्बन्धी का शरीर छूट गया होता परन्तु यहाँ तो प्रतिदिन दो-दो, तीन-तीन तार आते थे। देहली में कमला नगर-स्थित सेवाकेन्द्र, जहाँ से यह कार्य होता था, वहाँ ही पहले दीदी मनमोहिनी जी भी रहा करती थीं। उस सेवाकेन्द्र के नीचे वाली मंज़िल पर मकान मालिक रहता था। वे रात्रि को नीचे का द्वार बन्द कर दिया करते थे। अत: प्राय: हर रात्रि को तार वाला नीचे से आकर आवाज़ देता – "तार वाला। ब्रह्माकुमारी जी! तार ले लो।" आसपास के लोग यह आवाजें सुन कर आश्चर्यचकित होते कि यहाँ रोज़ ही तार आते हैं! यह है तो धार्मिक संस्था, धर्म के कार्य में रोज़ तार की क्या आवश्यकता!! तार में या तो यह लिखा होता कि तुरन्त साहित्य भेजो या लिखा होता कि अमुक ब्रह्माकुमारी को अमुक सेवाकेन्द्र पर भेजो। पड़ोसी भी रोज़ देखते कि अभी-अभी एक ताँगे में कुछ ब्रह्माकुमारी बहनें सेवोकेन्द्र पर आकर अपना सामान उतार रही हैं और पास ही खड़े दूसरे ताँगे में पहले ही से कुछ दूसरी ब्रह्माकुमारियों का सामान लादा जा रहा है। अवश्य ही उनके मन में प्रश्न उठते होंगे कि यह कैसी विचित्र संस्था है! मानो कहीं लड़ाई हो रही है, कुछ फ़ौजी भेजे जा रहे हैं और कुछ आ रहे हैं। और वास्तव में बात थी भी ऐसी ही। माया अथवा विकारों से युद्ध के लिए ही तो ईश्वरीय सेना द्वारा यह सब कुछ हो रहा था।

सेवा की तीव्र गति की जितनी पराकाष्ठा, उतनी ही प्रेम की पराकाष्ठा

एक बार की बात है कि बाबा देहली में राजोरी गार्डन में ठहरे हुए थे। शिव रात्रि में केवल 4 या 5 दिन रहते थे। प्रात: मुरली में बाबा ने 'मनुष्य मत' और 'ईश्वरीय मत' में महान् अन्तर की बात कही थी। क्लास के बाद बाबा बोले – "बच्चे, मनुष्य मत और ईश्वरीय मत पर एक पुस्तक लिख कर, उसे झटपट छपवा कर सब केन्द्रों पर भेज दो। बोलो बच्चे, कब तक छप जायेगी?" मैंने कहा – "बाबा, कोशिश करूँगा कि एक हफ़्ते में तैयार हो जाये।" इस पर बाबा ने कहा – "कोशिश नहीं और एक हफ़्ता भी नहीं; यह तो शिवरात्रि पर सबको बाँटनी होगी।" मैंने कहा – "बाबा, किताब कितने पृष्ठ की हो?" बाबा बोले – "यह आप जानो। परन्तु उसमें मनुष्य मत और ईश्वरीय मत की सभी मुख्य बातों का अन्तर आ जाना चाहिए।"

मैं सोचने लगा कि चार-पाँच ही तो दिन रहते हैं। किताब को पहले हिन्दी में लिखा जाए, फिर उसे पढ़ कर कुछ सुधार किया जाये, फिर उसका अंग्रेजी में अनुवाद किया जाये। और, उसमें कोई महान् अन्तर का प्वाइन्ट भी न छूटे और उसमें मनुष्य मत तथा ईश्वरीय मत पर लिखे गए वाक्य भी लगभग बराबर-बराबर आयें ताकि किताब के आमने-सामने के पृष्ठ ठीक लगें। यह सब हो और फिर प्रेस वाला भी छाप दे; और फिर सबको समय पर पहुँच भी जाये! परन्तु मन में यह भी भाव था कि बाबा ने कहा है तो होगा ज़रूर। "हिम्मते मरदाँ मददे खुदा।"

मैंने रात-दिन लगा कर हिन्दी में मूल लेख तैयार किया और प्रेस में ही बैठ कर मैं अंग्रेज़ी अनुवाद कर-कर के देता गया। भाई विश्वरत्न जी भी दो-तीन रात लगातार वहीं छापेखाने में प्रूफ़ आदि देखते रहे। आराम और भोजन को छोड़ कर हमारी और समय की दौड़ लग गई। हिन्दी और अंग्रेजी की 64, 64 बड़े पृष्ठों वाली दो किताबें छप कर तैयार हो गईं। बाबा की सहायता से सारा काम ठीक हो गया।

परन्तु कुछ फ़ाका मस्ती से, दिनचार्या में हेर-फेर से, आराम न करने से और प्रेस में ठंड लग जाने से काम समाप्त होने के दूसरे दिन मुझे लगभग 104° बुखार हो गया। ईश्वरीय कार्य के बल के कारण फिर भी कुछ महसूस नहीं हुआ! एक मित्र डॉक्टर के कहने के अनुसार मैं सेवाकेन्द्र पर थोड़ा आराम करने के विचार से लेट गया। मैं यहाँ अकेला ही था क्योंकि अन्य सभी बहन-भाई राजोरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर बाबा के पास ठहरे हुए थे। अचानक सेवाकेन्द्र के द्वार की घण्टी बजी। उठ कर दरवाज़ा खोला तो यह देख कर आश्चर्य की कोई हद न रही कि भाई विश्व किशोर के साथ बाबा स्वयं आये हैं। मालूम नहीं, बाबा को किस प्रकार से सूचना मिली थी। बाबा ने कितना प्यार किया होगा और कैसे स्नेह-युक्त शब्द बोले होंगे, वह आप समझ सकते हैं। बाबा को मिल कर मेरी सारी थकान तत्क्षण ही दूर हो गई। मैंने सोचा, बाबा ने जितनी जल्दी छपाने के लिए की थी, उससे भी ज़्यादा जल्दी आकर इस बच्चे को प्यार देने के लिए की। छपाई के लिए तो बाबा ने चार दिन दिये थे और प्यार देने में तो बाबा ने एक दिन का वक्फ़ा (समय) भी नहीं डाला।

साहित्य-कार्य में बाबा की मार्ग-प्रदर्शना

साहित्य के सम्बन्ध में बाबा से मिलने और बात करने का प्राय: जो मौका मिलता उससे ज्ञान को और अधिक समझने में मदद मिलती और हम बाबा के विचारों को नज़दीक से समझ पाते। जब हम लिख कर बाबा के पास ले जाते तो उसे देख कर बाबा समय-समय पर कई प्रकार के निर्देश-आदेश देते और उस लेख में परिवर्तन या परिवर्धन करते। मैंने देखा कि जहाँ कहीं हिन्दी में 'परमपिता परमात्मा' शब्दों का और अंग्रेजी में 'सुप्रीम फ़ादर' (Supreme Father) शब्दों का प्रयोग होता वहाँ बाबा क्रमश: 'परमप्रिय' और 'Most Beloved' शब्द जोड़ देते। अपने लाल अक्षरों में जब बाबा ये शब्द जोड़ रहे होते, मन में प्रेम की एक लहर दौड़ जाती। यदि मैं बाबा के सामने न बैठ कर बाबा के बाजू की ओर बैठा होता तो बाबा लिखित पृष्ठ में ये शब्द जोड़ कर मेरी ओर मुड़ कर मुस्कराहट से मुझे मीठी दृष्टि देते, जैसे कि लिखने के साथ-साथ वे व्यवहार में भी परमप्रिय का पार्ट बजा रहे हों। उस समय यह आभास होता कि, देखो न, बाबा तो सचमुच परमप्रिय हैं ही। एक बार तो मैंने यह देखा कि सारे लेख में जितनी बार भी 'परमपिता' शब्द आया था, बाबा ने उन सब जगहों पर उनके साथ 'परमप्रिय' शब्द लिखा दिया। तब मैंने कहा – "बाबा, एक-दो जगह पर ही यह परमप्रिय शब्द आ जाये, क्या बार-बार इसका सब जगह प्रयोग करना ज़रूरी है? क्या यह पुनरावृत्ति (repetition) तो नहीं लगेगी?" तब बाबा बोले – "बच्चे, यह तो मीठा शब्द है न! इसे बार-बार लिखने में किसी को क्या एतराज़ है? अच्छा,

यदि कभी 'परमप्रिय' न लिखो तो 'ज्ञान के सागर' या अन्य कुछ लिख दिया करो!" इसी प्रकार जहाँ कहीं सतयुग या कलियुग का वर्णन आता तो बाबा कहते–बच्चे, गोल्डन एज (Golden Age) के साथ लिखो – 100% राइटियस, (righteous), रिलिजियस (religious), सॉलवेन्ट (sovent) और इसी तरह कलियुग के साथ इसका विपरीतार्थ लिये हुए शब्द ले लिया करो। बाबा के कहने का भाव यह था कि "100%" शब्द और "सॉलवेन्ट" (solvent) शब्द (कलियुग के लिए इनसॉलवेन्ट) भी लिखा करो। हम तो प्राय: 'रिलिजियस' और 'राइटियस' लिख देना ही काफ़ी समझते थे परन्तु बाबा "100%" और "सॉलवेन्ट" शब्द पर भी जोर दिया करते थे। बाबा सतयुग और कलियुग के साथ इतने विशेषण प्रयोग करते कि वाक्य बहुत लम्बा हो जाता और विशेषण बहुत अधिक दिखाई देते। हाँ, उन द्वारा इन युगों के बारे में हमारा मन्तव्य अवश्य स्पष्ट हो जाता। मैंने एक बार बाबा से कहा – "बाबा, आजकल लोग छोटे-छोटे वाक्य पसन्द करते हैं। ऐसे बड़े वाक्यों को समझना लोगों के लिए कठिन हो जाता है।" तब बाबा बोले – "पढ़ने वालों को इतनी समझ नहीं है क्या?" तो मैंने कहा – "बाबा, आप ही तो कहते हैं कि माया ने समझ ख़त्म कर दी है।" बाबा बोले – "अब तो बाबा आकर समझ दे रहा है न। बच्चे, इससे तो उनकी बुद्धि का ताला ज़ोर से खुलेगा।"

चित्रों के बारे में बाबा के महत्त्वपूर्ण निर्देश

चित्र बनवाने के सिलसिले में भी बाबा से कई बार बात होती। जब श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का चित्र बन रहा था तब बाबा बोले कि इसके ऊपर त्रिमूर्ति का चित्र भी होना चाहिए। त्रिमूर्ति के बिना यह चित्र किस काम का? त्रिमूर्ति के बिना तो यह चित्र भक्ति मार्ग का हो जायेगा। त्रिमूर्ति का चित्र होने से ही हम समझा सकते हैं कि इनको ऐसा पद देने वाला अथवा राज्य-भाग्य देने वाला कौन है? नहीं तो लोग तो इन्हें ही भगवान और भगवती मानते हैं। उन्हें यह थोड़े ही मालूम है कि ये तो 'रचना' हैं और इनका 'रचयिता' तो शिव बाबा है। हमारा उद्देश्य तो उन्हीं का परिचय देना है क्योंकि ऐसी ऊँची पढ़ाई पढ़ा कर नर से नारायण बनाने वाले तो वे ही हैं। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण तो हमारी पढ़ाई का लक्ष्य हैं। इस लक्ष्य को स्वयं तो कोई प्राप्त कर नहीं सकता और न ही संसार को यह पता है कि इनको ऐसी ऊँची प्राप्ति कराने वाला कौन है। अत: इनको आगे रख कर हमें इशारा तो शिव बाबा की ओर ही करना है क्योंकि ऊँच-से-ऊँचे भगवन्त तो एक वही हैं। जब बाबा यह बात बता रहे थे तो समीप बैठे हुए किसी ने कहा – "बाबा, अगर केवल शिव बाबा ही का चित्र दे दें तो कैसा रहेगा?"

जब अकेले शिव बाबा का अलग से चित्र छपने की बात हुई, तब बाबा बोले – "कर्त्तव्य (occupation) के चित्र के बिना अकेले नाम और रूप के इस चित्र से लोग क्या समझेंगे? यों तो मन्दिरों में शिव पिंडी की पूजा होती है और लोग उसे "शिव भोलानाथ" भी कहते हैं; परन्तु उससे वे कुछ समझते थोड़े ही हैं कि ये बाबा हमारे भण्डारे कैसे भरपूर करता है और काल-कंटक कैसे दूर करता है? बच्चे, गोले-सहित त्रिमूर्ति का चित्र अर्थ सहित है, युक्तियुक्त है और उसमें सारा ज्ञान समाया हुआ है परन्तु हाँ, यदि शिव बाबा के चित्र बनाने से, ईश्वरीय सेवा बच्चों के लिए सहज होती है तो भले ही बनाओ। परन्तु इसके साथ शिव बाबा के कर्त्तव्य का परिचय ज़रूर देना।" ऐसी ही बात बाबा श्रीकृष्ण के चित्र के बारे में कहते। बाबा समझाते कि उसमें अनेक जन्मों की कहानी दिये बिना वह भक्ति मार्ग का चित्र हो जाता है। परन्तु यदि ऐसे ही छापना है तो फिर ज़बानी इसकी कहानी बतानी जरूरी है। सभी को बताना है कि यह सतयुग के प्रथम राजकुमार थे और अब यह फिर निकट भविष्य में आने वाले हैं। इस प्रकार, विश्व के बाबा, पिताश्री ब्रह्मा एक-एक आत्मा का भाग्य बनाने के लिए अथक भाव से तत्पर रहते।

















1. फर्रूखाबाद- सप्तम मानस सम्मेलन में विचार व्यक्त करती हुई ब्र.कु. ऊषा बहन एवं ध्यानपूर्वक सुनते श्रोतागण। **2. शामली-** स्वास्थ्य मेले का झण्डा लहरा कर उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष भ्राता राजेश्वर बंसल, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष भ्राता घनश्याम दास गर्ग, ब्र.कु. सरला बहन एवं अन्य। **3. बरेली-** आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में जाट रेजीमेण्ट के ब्रिगेडियर भ्राता श्याम लाल, डिप्टी कमान्डर भ्राता अरुण कुमार, ब्र.कु. मेजर सती, ब्र.कु. नीता बहन एवं अन्य। **4. कन्नौज (सिपाही ठाकुर स्ट्रीट)-** 'तनावमुक्त जीवन कैसे जीयें' विषयक कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं प्रसिद्ध कवि दादा विश्वनाथ द्विवेदी जी, कवि एवं साहित्याचार्य भ्राता रमेश चन्द्र तिवारी जी, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा ब्र.कु. सरोज बहन। **5. गाजियाबाद (लोहिया नगर)-** ओम शान्ति हेल्प लाइन का शुभारम्भ करते हुए सिटी मैजिस्ट्रेट भ्राता सर्वजीत राम। साथ में हैं ब्र.कु. आनन्द भाई तथा ब्र.कु. विमला बहन। **6. ओ.आर.सी. (देहली)-** ट्रक ऑपरेटर्स युनियन के चालकों तथा अन्य कर्मचारियों को व्यसन मुक्ति की शपथ दिलाते हुए ब्र.कु. रोहित भाई। **7. सारनाथ (वाराणसी)-** क्रिश्चियन मिशनरी के फादर भ्राता सन्तियागो एवं सिस्टर्स के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद समूह-चित्र में ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन तथा अन्य। **8. महम-** साध्वी सुश्री सत्यानन्द जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में ब्र.कु. कोकिला बहन, ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. चेतना बहन एवं अन्य।

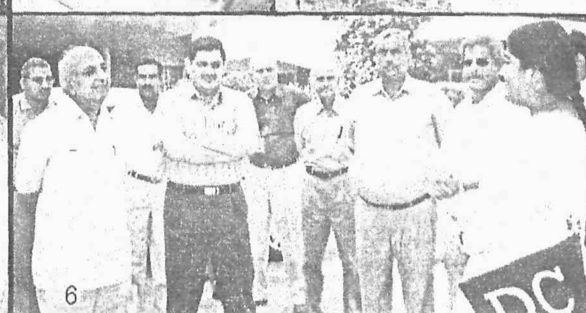
















1. देहली (मजलिस पार्क)- एशिया के चैम्पियन (स्वर्ण पदक विजेता) भारोत्तोलक भ्राता जुगल धवन को स्मृति-चिह्न भेंट करती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। 2. तरावड़ी (हरियाणा)- राजयोग भवन का शिलान्यास करते हुए राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. भाग बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन तथा अन्य। 3. पालम विहार- आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, जॉर्डन में पूर्व राजदूत भ्राता हरचरणसिंह ढोडी, ब्र.कु. भ्राता एम.डी. गुप्ता, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. उर्मिल बहन तथा अन्य। 4. पालमपुर (हि.प्र.)- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पूर्व राजस्व मंत्री भ्राता बृजबिहारी लाल बुटेल, महात्मा कृष्णगिरी जी, ब्र.कु. प्रेम बहन तथा अन्य। 5. होशियारपुर- सांसद भ्राता अविनाश राय खन्ना को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। 6. बावल (ओ.आर.सी.)- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र के कुलपति डॉ. एम.के. मिगलानी, जिलाधीश एवं अन्य महानुभावों से ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. गीता बहन। 7. अमृतसर- खेल प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मंच पर विराजमान हैं गुरुनानक विश्वविद्यालय के डीन डॉ. कमलजीत सिंह, ब्र.कु. भ्राता गिरीश पटेल, डॉ. भ्राता बसवराज राजऋषि, ब्र.कु. राज बहन एवं अन्य। 8. पटियाला (पातड़ा)- पंजाब यूथ कांग्रेस के उपाध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कमला बहन एवं ब्र.कु. भारत भूषण भाई।



1. तोशाम- विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा पर सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. उर्मिला बहन। साथ में ब्र.कु. मन्जू बहन। 2. **कालांवाली मण्डी**- नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करती हुई ब्र.कु. अचल बहन। 3. जलालाबाद- नगरपालिका कमिश्नर भ्राता अशोक कुमार को ईश्वरीय साहित्य देती हुई ब्र.कु. शर्मिष्ठा बहन। 4. हमीरपुर (डंगार)- श्री सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. तृप्ता बहन एवं अन्य। 5. सराहाँ (हि.प्र.)- आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हिमाचल विधानसभा अध्यक्ष भ्राता जी.आर. मुसाफीर, ब्र.कु. विमला बहन एवं अन्य। 6. बरवाला (हिसार)- मुख्य समाजसेवी भ्राता भीमसेन मक्कड़ जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। 7. सिरसा (शान्ति सरोवर)- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता हरमीत सिंह दून को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अचल बहन। 8. फतेहगढ़- जिला बार एसोसियेशन के अध्यक्ष भ्राता जवाहर सिंह को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. सुमन बहन। 9. लखीमपुर-खीरी (गोलागोकर्णनाथ)- श्री श्री 108 भ्राता दयास्वरूप ब्रह्मचारी जी को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. सुनीता बहन। 10. अम्बाला सिटी- आध्यात्मिक कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए एस.डी.एम. भ्राता सतबीर सिंह सैनी, ब्र.कु. सुनीता बहन एवं अन्य।



















1. झोझूकलां (चरखी दादरी)- राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में नैतिक शिक्षा पर सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. उर्मिला बहन। **2. पानीपत**- 'युवाओं के समक्ष चुनौतयाँ व समाधान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आई.वी. महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रधान डॉ. भ्राता आर.पी. गुप्ता, ब्र.कु. डॉ. भ्राता प्रेम मसंद, ब्र.कु. सुनीता बहन एवं अन्य। **3. तपामण्डी**- दिव्य ज्योति भवन का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता संत बलबीर सिंह, ब्र.कु. अचल बहन एवं अन्य। **4. बद्दी-बरोटीवाला**- आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध भागवत कथावाचक भ्राता पं. शैल जी महाराज, ग्राम पंचायत के प्रधान भ्राता गीताराम, ब्र.कु. शकुन्तला बहन एवं अन्य। **5. फिल्लौर**- ओम शान्ति आर्ट गैलरी का अवलोकन करने के बाद दयानन्द मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर्स व मेडिकल स्टूडेन्ट्स, ब्र.कु. राकेश भाई व ब्र.कु. ओमवीर भाई के साथ समूह-चित्र में। **6. पिन्जौर**- तनावमुक्त जीवन पर प्रवचन के बाद समूह-चित्र में हैं सी.आर.पी.एफ. के सी.ओ. भ्राता सिन्धु जी तथा अन्य अधिकारीगण और जवान। **7. रतिया**- विधायक भ्राता जरनैल सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अचल बहन। **8. कायमगंज**- तनावमुक्त महोत्सव का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्षा बहन मिथलेश अग्रवाल, ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. सरोज बहन एवं अन्य। **9. देहरादून**- 'व्यसन मुक्ति' विषय पर जेल में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन। साथ में हैं जेल अधीक्षक भ्राता ब्रह्मप्रकाश पाण्डे जी।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com Ph.No.: (02974) 228125, 228126 bkatamad1@sancharnet.in



1



2



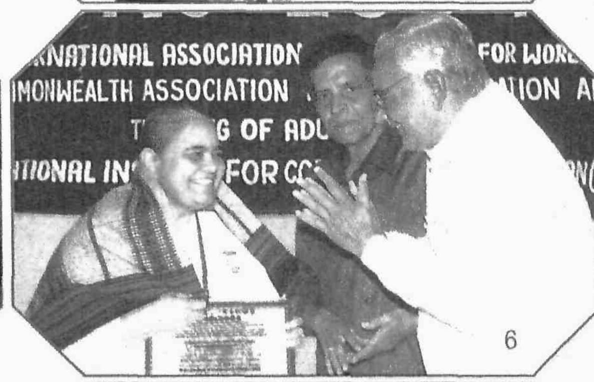
3



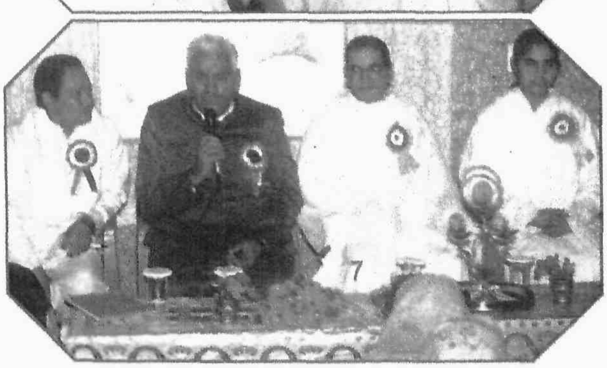
4



5



6



7



8

1. कानपुर (किदवई नगर)- सेवाकेन्द्र के लिए उपलब्ध भूमि का शुद्धिकरण करती हुई राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु. दुलारी बहन तथा अन्य। **2. इन्दौर**- केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री भ्राता सुनील दत्त को संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माऊण्ट आबू में पधारने हेतु निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. अनिता बहन, ब्र.कु. निर्मला बहन तथा अन्य। **3. ऐम्मिगनुर (आ.प्र.)**- आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता वाई.एस. राजशेखर रेड्डी जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राधा बहन। **4. चंगनाचेरी (केरल)**- 'मूल्यनिष्ठ समाज के लिए आध्यात्मिक ज्ञान' विषय पर सेमीनार का उद्घाटन करते हुए भ्राता सी.एफ. थॉमस, केरल के ग्राम विकासमंत्री, एम.जी. विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता डॉ. एस. थॉमस, ब्र.कु. बीना बहन तथा अन्य। **5. पटियाला**- प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता भ्राता परिक्षित साहनी को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. कमला बहन। **6. गाँधीनगर (गुजरात)**- ब्र.कु. कैलाश भाई को यू.एन.ओ.–2004 के ईन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एज्युकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस ब्रांच द्वारा गुजरात विधानसभा अध्यक्ष भ्राता मंगल भाई पटेल नेशनल एवॉर्ड प्रदान करते हुए। साथ में हैं अध्यक्ष प्रो. डॉ. नानुभाई जोशी जी। **7. सुजानपुर (पठानकोट)**- सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में पंजाब के मंत्री भ्राता रघुनाथ सहायपुरी अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. सत्या बहन तथा अन्य। **8. भुबनेश्वर**- पुरी गजपति महाराज श्री श्री दिव्या सिंह देव, ब्र.कु. लीना बहन, ब्र.क. कल्पना बहन तथा अन्य के साथ समूह-चित्र में।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.



पूना- "प्रभु सान्निध्य स्वर्णिम संध्या" विशाल कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए (बाएँ से) ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. सरला बहन, प्रो. विश्वनाथ कराड, ब्र.कु. रमेश शाह, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु. संतोष बहन, ब्र.कु. जयन्ती बहन तथा अन्य।



सम्बलपुर- "रजत जयन्ती समारोह" का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. पार्वती बहन, ब्र.कु. शारदा बहन, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. नीलू बहन तथा अन्य।



मंगलौर- "शान्ति महोत्सव" का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी, पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता एच.डी. देवगोड़ा जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. मृत्युञ्जय भाई तथा अन्य।



जयपुर- "वरदानों की शाम आपके नाम" विशाल कार्यक्रम का शुभारम्भ दृश्य। दीप प्रज्जवलित कर रहे हैं राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमति वसुन्धरा राजे सिंध्या जी, दादी जानकी जी, दादी हृदयमोहिनी जी, दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. सुषमा बहन तथा अन्य।